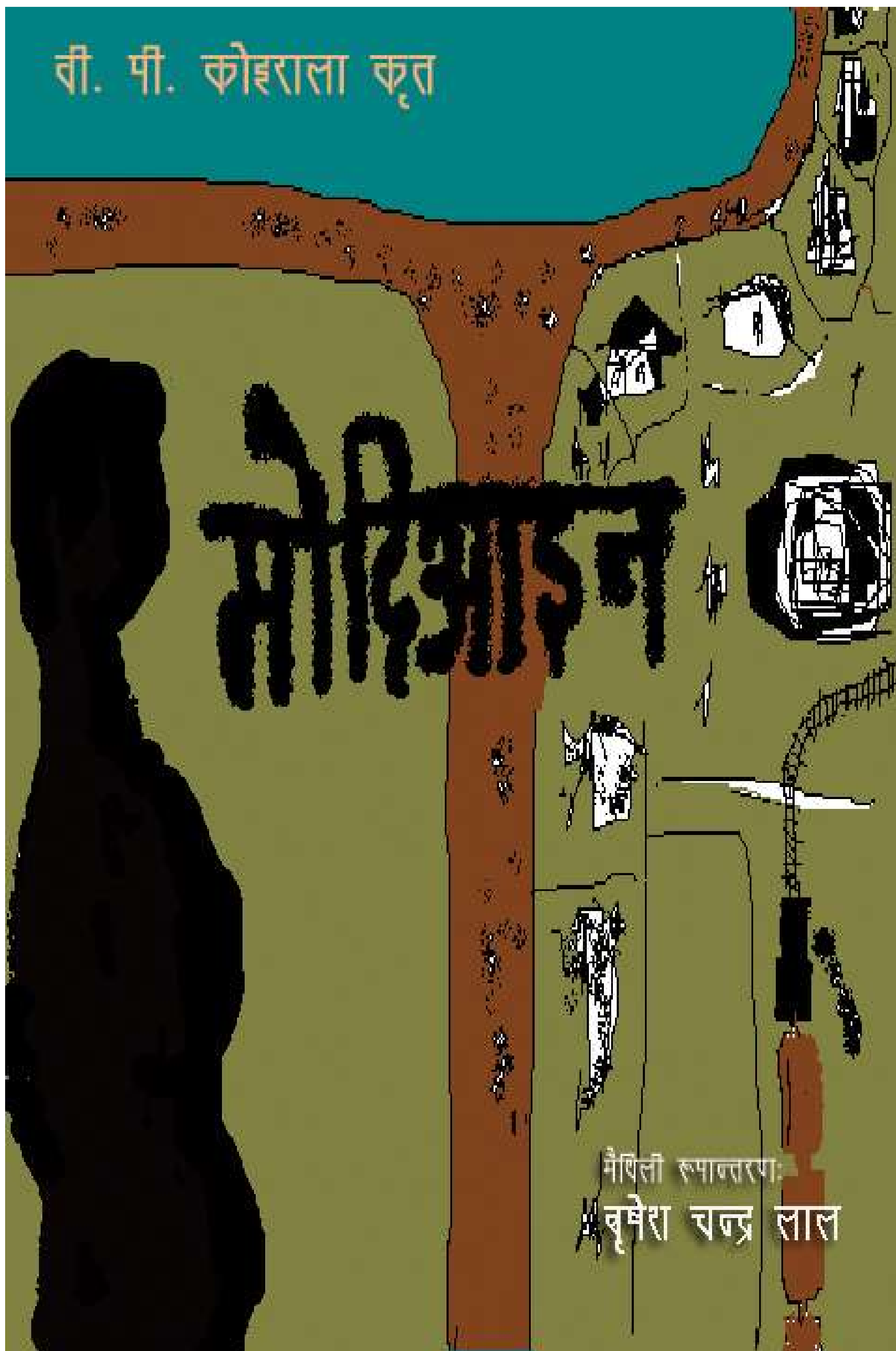


वी. पी. कोइराला कृत
मोदिआइन
मैथिली रूपान्तरण:
वृषेश चन्द्र लाल

बी. पीं कोइराला कृत

मोदिआइन

मैथिली रुपान्तरणः

बृषेश चन्द्र लाल

प्रकाशकः

सुदामा प्रकाशन

जनकपुरधाम, नेपाल

मोदिआइन

प्रकाशकः सुदामा प्रकाशन, जनकपुरधाम।

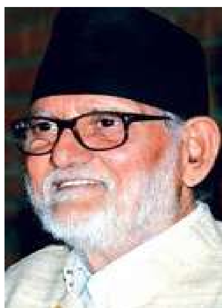
आवरणः बृषेश चन्द्र लाल

मूल्यः ने.रु. २५ टाका

भा.रु. २० टाका

२०६१ साल

दुई शब्द



एकाएक बृषेशजी मोदिआइनको मैथिली रुपान्तरणको पाण्डुलिपि मेरो हातमा थमाएर प्रकाशकीय अनुमति माग्नुभयो। एक छिनका लागि अचम्भित भएको थिएँ म, तर त्यो क्षण अत्यन्त खुसीको थियो। छात्रजीवनदेखि नै प्रजातान्त्रिक लडाइँ तथा समाजवादी आन्दोलनमा अत्यन्त सक्रिय भूमिका खेल्दै आउनु भएका बृषेशजी राजनीति जस्तै साहित्यमा पनि रुचि राख्नुहुँदो रहेछ। निश्चय नै यो आह्लादित गर्ने विषय हो।

विभिन्न भाषामा मोदिआइनको अनुवाद भइरहेको बेलामा नेपालकै दोस्रो भाषा मैथिलीमा अनुदित मोदिआइनको प्रकाशन हुनु निश्चय नै साहित्यिक जगतका लागि प्रसन्नताको सन्दर्भ हुनेछ। यसले मैथिलीभाषी समाजलाई आदरणीय विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको चर्चित कृतिको रसास्वादन गर्ने अवसर प्रदान गर्नेछ भन्ने मलाई विश्वास छ। यसले निश्चय नै साहित्यप्रेमीहरुमा नयाँ उत्साह र ऊर्जा पनि प्रदान गर्नेछ।

मोदिआइन लघु कलेवरमा आवद्ध रहे पनि यस भित्र सान्दाजुको दर्शनसार प्रकट भएको मलाई लाग्छ। गीताको कर्मयोगको उपदेशलाई मानवीय सन्दर्भमा अनुभव गरेर आध्यात्मिकतालाई अङ्गीकार गरे पनि कुरुक्षेत्रका भीषण मानव-संहारलाई मानवताको निम्ति घातक कर्म भएको ठहर गरेर सिङ्गै महाभारत तथा प्रेम र जीवनको सारतत्वलाई यो सानो आकारको उपन्यासमा सान्दाजुले अटाउनुभएको छ। यद्यपि पक्ष र विपक्षमा समीक्षाहरु प्रकाशित भइरहेकै छन्, मलाई भने सान्दाजुको राजनीतिक व्यक्तित्व यस उपन्यासमा मानवतावादको नाउँमा रुपान्तरण भएको जस्तो लाग्छ।

सान्दाजुका साहित्यिक र राजनीतिक दुबै व्यक्तित्व उत्तिकै अग्ला र आरोहणयोग्य छन्। वहाँको साहित्यमा राजनीतिक प्रभाव छैन भनिन्छ तर यो कुरा साँचो जस्तो लाग्दैन। वहाँ जस्तो राजनीतिक संस्कार भएको व्यक्तित्वमा यो झनै असम्भव कुरा हो। तर एउटा सत्य के हो भने वहाँले भने जस्तै राजनीतिको प्रत्यक्ष छाया साहित्यमा परेको छैन। अन्तः प्रेरणाबाट प्रभावित भई स्वतन्त्र लेखनलाई बढी मन पराउने भएका कारण वहाँका सबै विधाका रचना नयाँ नौला र सारगर्भित बनेका छन्। मोदिआइन पनि यसै कित्ताको अब्बल रचना हो।

यति गम्भीर भावको कृतिको अनुवाद लर्तरो कुरा होइन। बृषेशजीको यस प्रयत्नका लागि धन्यवाद दिंदै यसको गहिराइमा पुगेर रस लिने काम विज्ञ पाठकहरुबाट हुने नै छ भन्ने विश्वास लिएको छु। सान्दाजुको प्रत्येक कृतिको मैथिलीमा अनुवाद होस् भन्ने चाहन्छु। धन्यवाद !

२०६१/१/११

(नेपालमे लोकतान्त्रिक समाजवादक प्रखर प्रवक्ता एवं लोकतान्त्रि आन्दोलनक अविचल स्तम्भ स्व. सुशील कोईराला ११ फरबरी २०१४सँ १० अक्टोबर २०१५ तक नेपालक प्रधानमन्त्री रहलाह।)

कृतज्ञता

बहुत पहिने हमरासभक श्रद्धेय नेता श्री विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाजीक कृति ‘मोदिआइन’ पढ़ने रही। हमर आदरणीय नेताक रचना भेलाक कारणेँ आ’ ताहूमे प्रजातान्त्रिक अधिकारहेतु निरन्तर संघर्षरत जीवनक अवर्णनीय कठीन यातनाक क्षण बन्दीगृहसँ लिखल हएबाक कारणेँ हुनकर ई कृति हमरा आकृष्ट कएने छल। जखन अद्योपान्त पढ़ि लेलहुँ तँ ई हमरा वेश आकृष्ट क’ लेलक आ’ सदाक हेतु अपन छाप हमरापर लगा देलक। गीतापर बी.पी.क दृष्टिकोण, मानवत्त्व आ’ देवत्त्वक भेद हमरा अद्भूत लागल। तत्क्षण हमरामे एकर अनुवादक लालसा जागृत भेल। हमरा लागल जे वास्तवमे लोककेँ नीक लोक बनबाक चाही ... बड़का नहि !

एहि उपन्यासमे वी.पी.क शैशवक किछु संस्मरण हएबाक बेश सम्भावना अछि। हुनक शैशवक महत्त्वपूर्ण अवधि मिथिलाञ्चलमे बीतल छन्हि। एहि उपन्यासमे सेहो ओ अन्तमे दड़िभङ्गासँ जयनगर घुरिकए अबैत छथि। तैं “नीक बनक चाही बड़का नहि !” अवस्से मिथिलेक प्रशिक्षण हएत जे सुन्दरीजल जेलक कठिनतम परिस्थितिमे सेहो हुनक मार्गदर्शन कएलक। हमरा लगैत अछि, मिथिलाक ई महत्वपूर्ण सीख मिथिलाञ्चलक लोकक बीचमे फेरसँ सिंचित हएबाक चाही।

आ’ फेर जेना होइत अएलैक अछि, हम बिसरि गेलहुँ। नीक चीज लोक बिसरि जाइत अछि। मुदा हमर अग्रज द्वय पूज्य गिरीश चन्द्र लाल आ’ शिवेन्द्र लाल कर्ण हमरा स्नेहपूर्वक घचघचओलन्हि, अढ़ोलन्हि आ’ एकर अनुवाद प्रारम्भ करबा देलन्हि। परम पूज्य आचार्य सोमदेव एवं आदरणीय अग्रज भाईजी डा. राजेन्द्र प्रसाद ‘विमल’क आर्शीवाद सदैव प्रेरित आ’ मार्गदर्शन करैत रहत। शिवेन्द्र भैयाक शुद्धाशुद्धिमे जे योगदान अछि से जौं नहि सम्भव होइत तँ आनेआन चीजसभ जकाँ इहो कतए ने फेका जाइत। ... हमर विजयाक प्रोत्साहन आ’ बेर-बेरक – ‘पढ़ल-लिखल आदमीसभकेँ करएबला काजसभ करु ने !’ उक्ति हमरालेल शक्तिदायक रहल। कामोद भैया, मधुकान्तजी आ’ अनुज रतीशक प्रकाशनमे योगदानहेतु सदैव आभारी रहब। सभक प्रतियेँ हम कृतज्ञ छी आ’ सभ दिन हमर हृदयमे ई कृतज्ञता भरल रहत। प्रणाम !

२०६१/१/१५

आमुख



१. मोदिआइनक डीहपरसँ ... ...

स्वनामधन्य बी.पी. कोइराला, जयप्रकाश-लोहिया-फणीश्वरनाथ रेणुयुगक राजनीति धरातलक बेछप महासाधक रहलाह – हिन्दीयोकेँ अमूल्य योगदान केनिहार। नेपाली मैथिली कर्मक्षेत्रक तँ ओ भोरुकवे छथि आ' एहि मर्मक्षेत्रक पूर्णचन्द्रोदयक मोहक प्रतीक। मैथिलीक पुण्यभूमि जनकपुर होइत दड़िभङ्गा आएल हुनक बालमोन नगरदर्शनक क्रममे एहि सिद्धभूमिक हड़ाही (हड़ाहा) पोखरिक प्रसङ्गक-स्वप्नमे बोहिआइत ई रम्यकथा; जकर सूत्र महाभारतधरि जुड़ैत अछि – उपन्यासिका 'मोदिआइन' नेपालीमे खूब ख्याति पओलक। संगहि दड़िभङ्गासँ जुड़ल ई प्रसङ्ग सेहो। एहन रचनाक आईधरि मैथिलीमे रुपान्तरित नहि होएब मैथिली भाषी, खास क' दड़िभङ्गा आवासीलेल तँ बूझू जेना अपने घरमे गड़ल सम्पत्तिसँ अनजान रहबाक अभाग्यसन छल। पहिलबेर ई अमूल्य कथाघट 'मोदिआइन' केर मैथिली रुपातन्तरण प्रस्तुत कै बृषेश चन्द्र लाल प्रशंसनीय ऐतिहासिक काज कएलनि अछि।

दड़िभङ्गामे जखन नगर-निगम बनल; हमरासँ एकर परिचितिलेल चारिगोट पाँती लिखौल गेल छल –

पग पग पोखरि, माछ मखान। सरस बोल, मुस्की मुखपान।।
विद्या-वैभव शान्ति-प्रतीक। ललितनगर दड़िभङ्गा थिक।।

से एतय एहि पोखरिसभक नायक छथि गंगासागररुप पैर, आ' दिग्घीसन पेटवला, हड़ाह मुख, हिमालदिस तकैत हड़ाहा वा हड़ाही महापोखरि। एहि पोखरिलेल प्रचलित किंवन्ती आबक लोक ओहिना बिसरल जा रहल अछि; जेना आइसँ अस्सीवर्ष पूर्वक ग्रामीणनगर दड़िभङ्गाक मौलिक परिवेश आधुनिक वैश्वीकरणदिस बेतहास भागल जाइत दरभंगाक लोकक कल्पनोमे आब सम्भव नहि। कत्तऽ ओ एक्का- टमटम आ' कत्तऽ ई टेम्पो-कार। कत्त' ओ चूड़ा-दही-लड्डू? कत्त' ई चाट-समोसा-चाउमिन। ... से परिवर्त्तन होएब उचिते। अपन काल-चिन्तनक स्वाभाविक आनन्दलेल एकान्तक्षणमे लोक अतीत-गाथा, वर्त्तमान-व्यथा आ' भविष्यक कल्पकथारुप भाव-प्रवाहमे सैर करएचाहैत अछि – जाहिलेल नाव होइछ साहित्य। वर्त्तमानकेँ तँ सभ देखैत-परखैत छथि। भविष्य

हारल वाचीजनाप्रिय मोनद्वारा अपने गढ़ा जाइछ। मुदा दन्तकथासँ जुड़ल ऐतिहासिक भावयात्राकेँ अङ्कित करक सौभाग्य तँ बिरलेकेँ भेटैत छनि ... आ' सेहो कर्मठ समदृष्टि समाजसेवी विचारक बी.पी. कोइरालासन भावप्रवण साधकक बाल्यकालक स्मृतिशेषक एहि अशेषकथाक तँ चर्चे नहि हो।

'मोदिआइन'मे वर्णित दड़िभङ्गाक हड़ाहीक पूब-दक्खिनकातक इनारक अवशेष एखनहुँ अछि; जतयसँ शुरु होइत छल मोदिआइन आ' आवासीय भोजनालयसभक क्रमपाँती। ओइठामसँ दक्खिन अछि संग्रहालय आ' हालमे बनैत संगीततालबद्ध नचैत फुहारा। ... आगन्तुक आ' नगरवासी संग्रहालयमे इतिहास तकताह आ' फुहारापर अपन कल्पनाक पाँखि पसारताह। के पूछत आब हड़ाहीक ओइ अपनामे इतिहास पचौने मोहारकेँ, जे आब नालीमे भासैत सेमारक आँचरतर सड़ि-गलि गेल अछि !! प्रस्तुत कृतिकेँ पढ़ि, हमर कवि मोन साँझखन 'मोदिआइन'क स्मृतिशेषक तलासमे हड़ाही टरेसक ओही इनारलग गेल। बिजुरी रहबाक प्रश्ने नहि। सुझितो अछि कम्मे। एकटा बोनझाड़युक्त मोहारलग मोदिआइनक दोकान, मलाहिनक प्रेत आ' महाभारतक इतिकथा – तीनू उभरल, हजार हजार हाथसँ बी. पी. कोइरालाक सङ बृषेश चन्द्र लालकेँ आर्शीवाद दैत !! हम मुग्ध भ' गेलहुँ।

अन्तमे एतबे, जे उपलब्ध भेलोसन्ताँ जे अइ पोथीरुप धरोहरसँ परिचित नहि होएताह हमरालेखेँ हुनक जिनगी बुझू दरभङ्गा टीसनक प्लेटफर्मेपर कटि गेल – अपहृत जीवित हाड़क समानधर्माजकाँ !! ... ओना पोथीक कलेवर कनेक छोट, मुदा "देखनमे छोटन लगए, घाव करए गम्भीर"केँ चरितार्थ करैत। जुल्मी ब्रेनटानिक ! कथा जतबे सरस, विचार ततबे गम्भीर – हड़ाहीसँ कुरुक्षेत्रधरि ! पराविज्ञानसँ अपराज्ञानधरि !!

दरभंगा ८४६००१, भारत
दूरभाषः ०६२७२-२४२६०१

– आचार्य सोमदेव
०८-०४-२००४ ई.



२. मोदिआइनक देहरिसँ ... ...

'मोदिआइन' नेपाली साहित्यक कालजयी कृति थिक जाहिमे महाभारत युद्धक औचित्य आ' गीता दर्शनपर पहिल बेर एहन तात्विक आ' विचारोत्तेजक प्रश्न ठाढ़ कएल गेल अछि, जकर प्रत्यक्ष सम्बन्ध मानव-अस्मिताक लेल अपरिहार्य ओहि मानवीय मूल्यसँ छैक, जकरा पण्डितलोकनि पारम्परिक पूर्वाग्रहक धुतहुकेर पाखंडपूर्ण तुमुल घोषसँ अवदमित आ' अवमूल्यित करैत आएल अछि। विसंगत जीवन भोगैत मोदिआइन महाभारत युद्धक साक्षी नारी नाम्नी कल्पित पात्रमे स्वयंमे प्रत्यारोपित भए कथानायक समक्ष प्रस्तुत भेल अछि।

महाभारतक प्रसंग छैक। ... हस्तिनापुर दुर्योधनक दरबार आ' इन्द्रप्रस्थ युद्धिष्ठिरक राजमहलमे अन्तःस्पर्द्धा बढ़ैत चलि जाइत छैक। छलपूर्ण द्युतक्रीड़ामे पाण्डवक पराजय आ' द्रौपदीक लज्जाजनक अपमान। पाण्डवक वनवासक समाप्तिपर पाण्डवद्वारा अपन राज्य घुराबएहेतु दुर्योधनकें पठाओल सम्बाद आ' दूतक तिरस्कार। वैमनस्यक धधकैत ज्वालाक युद्धक विभिषिकामे परिणत होएबासँ पूर्व द्वारिकासँ कृष्ण मध्यस्थताक हेतु अबैत छथि। श्री कृष्ण वृष्णि वंशक आ' सिन्धु प्रसृत राज्यक वीर नेता थिकाह, मुदा पाण्डवक सम्बन्धियो तँ छथि ! तैं पाण्डवक हितमे कपटसँ भरल निर्णय दैथ तकर सम्भावना तँ छैके। दुनू पक्षसँ युद्धक तैयारी होमए लागल। कृष्ण अर्जुन आ' दुर्योधनसँ पुछै छथिन्ह –"एक दिशि अक्षौहिणी सेना रहत, दोसर दिशि हम। कोन लेब ?" दुर्योधन अक्षौहिणी सेना चुनैत छथि। अर्जुनक मान्यता छन्हि –"यतो कृष्णस्ततो जयः।" पाण्डव आ' कौरवक विराट सेना कुरुक्षेत्रमे युद्धक हेतु जमा होइत अछि। असंख्य शंखध्वनिक निनाद। युद्धक बीच मैदानमे ठाढ़ अर्जुन चकुआ कए देखै अछि – सगरो ओकर अपनहिं रक्त-सम्बन्धीक लस्कर छैक। ओकर मानवीय ह्रदय द्रवित भ' उठैत छैक; धिक्कार क' उठैत छैक। मुहसँ आर्त्तवाणी बहराइत छै –"नहि, हम अपन कुटुम्बलोकनिक हत्या अपनहिं हाथैं किन्नहु ने करब ! हमरा राज्य नहि चाही।"

तखने नेता कृष्ण ठाढ़ भ' जाइत छथि। ओजगुणसम्पन्न कवित्त्वपूर्ण भाषामे सोरह अध्याय गीता धाराप्रवाह बजैत जाइत छथि –"आत्मा अमर थिक, देह मात्र जीर्ण वस्त्र जकाँ बदलैत अछि। अर्जुन गाण्डीव उठाबह, कौरवसेनाक बध करह। यएह तोहर धर्म। ... मरबह स्वर्ग पएबह, जीबह राज्यसुख भोगबह ! ... उठह अर्जुन, उठह !! ... "

उपन्यासकार कोइरालाक दृष्टिएँ ई मानवता आ' दैवत्त्वक द्वन्द्व थिक। अर्जुन करुणा, सहृदयता, स्नेह, प्रेम, स्वजातीयता, कौटुम्बिकता, मैत्री, दयासन उदात्त मानवीय गुणक साकार प्रतिमा थिकाह। मुदा, हुनक ई सम्पूर्ण मानवीय गुण नेता कृष्णक गीता-भाषणक सम्मोहनमे तरहत्थीक रेत जकाँ उधिया जाइत अछि। हुनक प्रकृत धर्म फेका जाइत छैक आ' ओहि स्थानपर कृष्णक देवत्त्व आरुढ़ भ' जाइत छैक। जेना हुनकापर देवत्त्व सवार भ' गेल होइन्ह, ओ स्वयं स्वयं नहि रहैत छथि, श्रीकृष्ण भ' जाइत छथि आ' गाण्डीव उठा लैत छथि। हुनका संगहिं गीता सुननिहार कुरुक्षेत्रक सम्पूर्ण सैनिक उन्मादित भ' जाइत अछि। आखिर, श्रीकृष्ण नेता थिकाह ने ! भीषण युद्ध होइत छैक। कुरुक्षेत्रमे बहल सोनितक समुद्रमे गन्हाइत लाशक पहाड़ ठाढ़ भ' जाइत अछि। उपन्यासकारक प्रश्न छैन्हि – अर्जुनक करुणा, कुटुम्ब-प्रेम, सहज मानवीय सम्वेदनाकेँ कृष्णक युद्ध पक्षमे कराओल आत्मसमर्पण की उचित वा सार्थक सिद्ध भेल? कथा-नायिका मोदिआइन तैं बौआकेँ बुझबैत छथिन्ह –"बाउ, महान नहि, वीर नहि, नीक लोक बनब !" ई ओहि पूर्व प्रधानमन्त्री बी.पी.क आत्मनिर्णय थिकैन्हि जे राजा महेन्द्रद्वारा संसद बिघटनक पश्चात् सुन्दरीजलक बंदीगृहमे बंदी बनल आत्मसंघर्षमे लीन छथि – नेपालमे प्रजातन्त्रक पुर्नस्थापनालेल रक्तक्रान्ति चाही वा शान्तिपूर्ण सत्याग्रह? भीषण नरसंहार वा प्रेमपूर्ण मेलमिलाप? इतिहास साक्षी अछि निर्णय प्रीति आ' शान्तिक, करुणा आ' मैत्रीक भेल रहैक !

मात्र तीन दिनमे लिखल गेल एहि उपन्यासिकामे मोदिआइनक वेदनामे किछु समीक्षककेँ अस्तित्त्वक वेदना वा अस्तित्त्ववादी दर्शनक झलक भेटैत छैन्हि, किछु गोटे मिथककेँ वर्त्तमान सन्दर्भमे रुपान्तरित आ' व्याख्यायित देखि मुग्ध थिकाह, किछु लोक मानव-अस्मिताक गम्भीर मूल्यक पहिचानक कारणेँ विस्मित छथि, तँ किछु एकर आंचलिक परिवेशकेँ कलात्मक सज्जामे सजीव देखि सम्मोहित छथि। मुदा, हम उपन्यासकार कोइरालाक 'मोदिआइन'क दूरारुढ़ कल्पना, समयकेर सेलोलाइडपर मिथककेँ राखि ओकर मर्म चिन्हबाक वैज्ञानिक चिन्तन आ' तकरा कलात्मक सज्जा देबाक अपूर्व सामर्थ्य, परिवेशकेँ शब्द चित्रक माध्यमसँ जीवन्त बना देबाक कौशल, मानव मनक गहन परख आ' सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंकन आदि गुणसँ अभिभूत छी।

'मोदिआइन ' मैथिलीमे आबि जेना आओर सहज, सुन्दर, सरस आ' मधुर भ' गेल अछि। मूल उपन्यास हम दू बैसारमे पढ़ने रही, ई अनुवाद एक्कहि साँसमे पढ़ने बिना नहि रहल गेल। मैथिली भाषाक प्रकृति अनुकूल भाषाशैलीक प्रयोगक कारणेँ ई अनुवाद जकाँ नहि, मौलिक कृति जकाँ रसाप्लावित करैत अछि। एहन महान कृति सम्पूर्ण मैथिली भाषाभाषी पाठकक हेतु श्री बृषेश चन्द्र लाल हस्तामलक बना देलैन्हि अछि, तैं मिथिलांचलक सम्पूर्ण पाठकक दिशिसँ हम हिनकापर लाखलाख साधुवादक वर्षा करैत छी। मूलतः राजनीतिककर्मी होइतहुँ अपन मातृभाषा, संस्कृति आ'

साहित्यकप्रति हिनक असीम अनुरागक प्रमाण स्वयं इतिहास अछि, हमर साक्षीत्त्वकेँ पूर्वाग्रह मानल जा सकैत अछि। हिनक चिन्तनक उँचाइ, हृदयक भावप्रवणता आ' उपयोगमे नहि आबि सकल कलमक सामर्थ्य हम खूब नीक जकाँ जनैत छी तैं माँ मैथिलीसँ प्रार्थना मोनहिं मोन वर्षोसँ करैत रहलहुँ अछि जे हिनक सम्पूर्ण क्षमता जँ मैथिली साहित्यमे प्रकट भ' सकैत तँ मिथिला धन्य भ' जाइत ! विश्वास अछि, माता हमर प्रार्थना सुनतीह।

इत्यलम् ।

जनकपुरधाम, नेपाल

– डा. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल'

दूरभाषः ०४१-५२०२६२



बात बहुत पहिनेक थिक; हम बच्चे छलहुँ। बाल्यकालक लगभग बातसभ लोक प्रायः बिसरिए जाइत अछि। मुदा स्मृतिमे किछु एकदम स्पष्ट अँड़ल बैसल रहि जाइत छैक। जेना कि कोनो दूर ठाढ़ मनुख स्पष्ट नहि देखएलोपर ओकर कद-काठी, लत्ता-कपड़ा, भाव-भङ्गिमा आ' जाहि घर-बारीमे ठाढ़ भ' ओ अपन जन-बनिहारकेँ देखिरहल अछि तैसभकेँ मिलाकए हमरासभ ओहि ठाढ़ व्यक्तिकेँ ठेकानि लैत छिऐक जे ओ तँ परमपरिचित फलाना छथि। तहिना किछु स्मृति धोंकाएलसन देखाइत अछि जकरा ठेकानएलेल कल्पनाक मदति लेबए पड़ैत छैक।

स्मृतिक आधारपर कोनो पहिलुका घटनाकेँ क्रमबद्ध तथा अर्थयुक्त बनाबएहेतु कल्पनाक सहयोग आवश्यक भ' जाइत छैक से बुझना जाइछ। उदाहरणार्थ, जेना पुरातत्त्वववेत्तालोकनि कोनो खँड़हरमे उपलब्घ ईंट, पाथर, भूमिक बनौट, किछु आकारमय काठक रचनासभ आ' गृहनिर्माणमे प्रयुक्त आवश्यक अन्य सामग्रीसभक आधारपर बहुत पहिने ठाढ़ कोनो राजप्रासादक वर्णन क' दैत छथि।

लोकसभ पूछत – ई कथा ठीके साँचे छैक? ... अथवा एकगोट गल्प मात्रे अछि ई? एहि सन्दर्भे हमरा एतबा कहबाक अछि जे ई ४० बर्ष पहिने हमर बाल्यकालक भावनामय दुनियाँमे घटल एकगोट घटना थिक आ' एतेक दिनक बाद अपन स्मृतिक दूरबीनसँ आई हमरा ई जेहन देखाइत अछि तथा वर्त्तमानसँ संयोजनक पश्चात् जेहन एकर आकार बनि क' भ' गेल छैक, हम तकरेटा ओहिना ओही रुपमे वर्णन क' रहल छी।



हँ, तँ कहिरहल छलहुँ, बात बहुत पुरान थिक। हमरासभक गुमस्ता आ' घरक परम हितैषी मिसरजीकेँ अपन कोनो काजसँ दड़िभङ्गा जएबाक तैयारी करैत देखि हमहुँ जीद्द करए लगलियन्हि, – "मिसरजी, हमहुँ जाएब !"

"अहाँ कतए जाएब, बौआ? हमरा एकगोट काज अछि। काल्हिये तँ हम दौड़ले फिरि जाएब ! बेकारे हरान होमए कथीलेँ जाएब ?"

हम अपन जीद्द नहि छोड़लहुँ, कहलियन्हि, – "हम दड़िभङ्गा कहिओ नहि गेल छी।"

"ओहिठाम देखएलायकक किछुओ छैक, बौआ?"

"कहाँदोन दड़िभङ्गा महाराजक दरबार छन्हि, हथिसार छन्हि, बड़का अस्तबल छन्हि, कचहरी छन्हि आ' बड़का-बड़का घरसभ छैक ... नहि मिसरजी, हमहुँ जाएब।"

हमर जीद्द जीतल। हमहुँ एकगोट छोटका मोटरी ल' क' मिसरजीक संगे दड़िभङ्गा अएलहुँ। तहियाक दड़िभङ्गा स्टेशन बुझू तँ कङ्काले जकाँ छल। निच्चामे पातर अलकतरा बिछाएल बड़का प्लेटफारम आ' भितरसँ सटल एकगोट नाम टेबुलपर बाहरक कोलाहलसँ एकदम निर्द्वन्द्व भ' मुड़ी गोंतने स्टुल-स्टुलपर बैसि अपन काज करैत स्टेशनक कर्मचारीसभ। दोसरकात जिल्लाक बड़का-बड़का पदाधिकारीसभ(जे तखने स्टेशनपर आएल रहैत छलाह।) विश्राम करैत छलाह जतए कोरमे लाल मगजी लागल बेंतक गोनरिसनक बड़का पंखा लटकल रहैत छल जकरा एकगोट करिकबा कुल्ली डोरी नेने बाहर भीतमे अड़ेंस लगोने औंघाइत घिचैत आ' छोड़ैत रहैत छलैक। जेना-जेना डोरी तनाइत छलैक तेना-तेना भीतर कोठरीमे पंखाक डण्टी मचमचाइत हिलैत छलैक। भीतरक लोहाक घिरनी सेहो ओही सुरमे आब खसत तब खसत होइत खिर्रररर करैत नचैत रहैत छलैक ... एकटा प्लेटफारमसँ दोसरपर जाएबला बड़का पुल तँ निःसन्देह कङ्काले सन छल, गणितक गुणन चिन्हक आकारमे बनाओल ओकर घेरा लाल रंगमे रङ्गल रहैत छलैक। ... ओना भरिदिन कोनो दैत्य जकाँ ठाढ़ आ' स्टेशनक सम्पूर्ण वातावरणक घोरल अस्तित्वकेँ छपने ओ पुल रेल अबिते लोकसभक अकारणक व्यग्रतासँ थरथराए लगैत छल। ... ओहिना स्टेशनोपर ... जखन गाड़ी अबैत छलैक तखन अत्यन्त चहलपहल, दौड़धूप, भागमभाग, असंख्य कण्ठक तुमुल हाहाकार आ'

ताहिपर पान-सिगरेट-बीड़ी बेचएबलासभक कण्ठफोरबा चिकड़नाईक साम्राज्य भ' जाइत छलैक। गाड़ी स्टेशनपर पहुँचिते कतए ने कतएसँ बेहिसाब असंख्य कुल्लीसभ बरबराकए पूरा प्लेटफार्मपर आ' डिब्बा-डिब्बामे भरि जाइत छल तथा पसिंजरक मोटासभपर हाथ धरैत बुझू ने कब्जे करैत कहैत छल, – "एक्के पैसामे बाहर ... पहुँचा देब।"

दड़िभङ्गा स्टेशनपर पहुँचएसँ बहुत पहिनहिं पसिंजरसभ अपन-अपन मोटरी-चोटरी मिलाबए लागल छल। डिब्बामे हलचल मचि गेल छलैक। ... मिसरजी सेहो उठिकए अपन मोटाकेँ देखलन्हि। सुरक्षित छलन्हि। बहुतो पसिंजर अपन-अपन समान गनय लागल, – "जम्मा कएगोट छल, अयँ ...?" "एहिठाम तँ सातेटा देखैत छी। ... हूँ ...! भेटल, एकटा मोटरी ओम्हर छल।" बूढ़पुरानसभ धियापुताकेँ सम्झाबए लगलखिन्ह, – "हे रौ, एम्हर-ओम्हर नहि करिहे ! हेरा जएबे। ... दड़िभङ्गामे बड्ड भीड़भाड़ रहैत छैक। हमरासभकेँ पकड़ने रहिहे ... नहि छोड़िहे !" घोघसँ झाँपि-तोपिकए अपनाकेँ समेटने महिलासभ असंयत भ' हड़बड़ाएल दृष्टियेँ चारुकात देखए लागलि छलि। ... हम तँ पहिनहिसँ हड़बड़ाएले छलहुँ, डिब्बामे चञ्चलता अबिते चटपट अपन मोटरीसहित उठि ठाढ़ भ' तयार भ' गेलहुँ। मिसरजी बजलाह, – "बौआ, कथिलए हड़बड़ा गेलहुँ ? ... एखन बड्ड देरी छैक। भल तँ राजदरबार देखाएल अछि। ... हे, वाऽ देखिऔक !"

ओ दहिना खिड़कीलग आबिकए दूर देखाइत ललका दरबारदिसि आङगुर देखओलथि। हमहुँ व्यग्रतासँ गर्दनि उचका-उचकाकए दरबारदिसि ताकए लगलहुँ। रेल बेगसँ दौड़िरहल छलैक; सिसो, बाँस आ' आमक फुलबारी दरबारकेँ छेकि देलकैक। ... एक-दूटा क' छोटका-छोटका शहरिया सनक घरसभ देखाए लागल – ईंटाक दिवाल मुदा उपर खर वा खपड़ाक एकतल्ला घरसभ। एकचारी खसाकए बनाओल काम चलाउ दलानहेतु बरमदा निकलल घरसभ सेहो देखाए लागल। मिसरजी हमरा सम्झाबए लगलथि, – "बुझलिऐक, ओ ललका नौलक्खा दरबार थिकैक। ... नौ लाख रुपैया लागल छैक बनाबएमे !"

गोलगला गञ्जी पहिरने एखनतक एकदम निश्चल भ' क' एकगोटे श्लोक पाठ करैत बैसल छलाह। जेना हुनका असह्य भ' गेल होइन्हि ओ चट् प्रतिकार करैत कहलखिन्ह, – "के कहलक जे ई नौलक्खा दरबार थिकैक ? ... ओ दरबार तँ राजनगरमे छैक। एकरा बनाबएमे डेढ़ करोड़ रुपैया लागल अछि, डेढ़ करोड़ !"

अपन बात समाप्त करैत ओ एकबेर डिब्बामे चारुकात सगर्व दृष्टि घुमओलथि, जेना ओ दरबार हुनक अपन निजी निवास स्थान होन्हि आ' लागत कम आँकि मिसरजी हुनक हैसियतक अपमान कएने होइथिन्ह। यात्रीसभक ध्यान अपनादिसि सहजे आकृष्ट पाबि ओ महानुभाव अत्यन्त

कुशलतापूर्वक खैनीक थूक खिड़की दने पिच्च द' थूकैत आगाँ बढ़लाह, – "महाराजाधिराज बड्ड शौखसँ एहि दरबारक निर्माण करओलथि। हिन्दुस्तानमे ओहन कारीगरसभ नहि छलैक, तैं इटलीसँ कारीगरसभ मँगाओल गेल। भीतरमे सभतरि ललका संगमरमर छाड़ल अछि, ... आ' सेहो इटलीयेसँ मँगाकए ! ... बड़का-बड़का ऐना छैक, आदमीसँ दोब्बर कदक ऐनासभ !! ... शीशाक सभ समान बेल्जियमसँ, पर्दा आ' टेबुल-कुर्सी तथा पलङ्गपरक कपड़ा, ओछाओन आ' चद्दरिसभ फ्रान्सिसी सिल्क, मखमल आ' साटिनक थिकैक। काठक सम्पूर्ण समान फर्निचरसभ इङ्गल्याण्डसँ आएल छैक, बुझलिऐक ? ... डेढ़ करोड़ पड़ल छैक, डेढ़ करोड़ !!"

आँखि फाड़ने सभ हुनकर गप्प सुनिरहल छलन्हि कि गाडीक गति किछु मध्यम भ' गेलैक। यात्रीसभ फेर हड़बड़ाकए अपन मोटरी-चोटरीसभ मिलाबए लागल। हम फेरु ठाढ़ भ' गेलहुँ। मिसरजी हमरा अन्तिम चेतावनी देलन्हि, – "हमरा किन्नहु नहि छोड़ब। ... बड्ड हुलि रहैत छैक स्टेशनपर !"

साँचे स्टेशनपर बड्ड धक्कमधुक्का रहैक। डिब्बामे अकस्मात् कुल्लीसभक प्रवेश हुलिकेँ आओर कसमकस बनाए देलकैक। कोलाहल एहन जेना कतहु अकस्मात् अगिलग्गी भ' गेल होइक। एकटा छोटका कुल्ली हमरालग आएल आ' कहलक, – "ई मोटा हम बाहर पहुँचा देब। ... अधे पैसामे ! "

बड्ड कलपि क' ओ हमरा कहने छल। ओकरा देहपर एकगोट चिथड़ीएटा रहैक। हम मिसरजीदिसि तकलहुँ। ओ बड़ी जोड़सँ चिकरलखिन्ह, – "भाग... !"

सभसँ कठीन छल प्लेटफारमसँ बाहर निकलनाई। एकटा छोटका फाटक, सेहो अधे खोलल। बीच्चेमे ... पूर्ण अधिकारयुक्त भंङ्गिमा लए एकगोट कर्मचारी ठाढ़ छल। ओकर ट्वीलक उजरा पेन्ट आ' कोट रौदमे खूब चमकि रहल छलैक जेना प्लास्टर लगाकए चून पोतल होइक। कपड़ासँ बेशी ओकर कारीझाम मुहमे लागल तेल आ' कपारपर बाहर निकलल माथक नाइट कैपक लोलपरक पेटेन्ट चमड़ा रौदमे खूब चमकि रहल छलैक। एकबेर तँ दहिना कातसँ निकलल हुलि हमरा धकेलैत मिसरजीक हात छोड़ा देलक। हम खूब जोड़सँ मिसरजीक माथदिसि तकैत चिचिअएलहुँ, – "मिसरजी !"

फाटकपर ठाढ़ टिकटचेकर एकबेर पूर्ण अधिकारयुक्त गम्भीर वाणीमे सभकेँ डटलक, – "एक-एक क' क' आउ ! ... ठेलमठेल नहि करु !"

कहुना क' मिसरजीकेँ पकड़एमे सफल भ' गेल छलहुँ मुदा एकबेर फेरो बड़ी जोरसँ धक्कमधुक्का आ' ठेलमठेल भेलैक। हमरा फेरो धकिया क' अलग ठेल देलक। अपन जान आ' काँख तरक मोटरी कहुना क' बचबैत हम फाटकसँ बाहर निकललहुँ। मिसरजी कहलन्हि, – "आब मोदिआइन ओतए चलू। ... ओहिठाम स्नान-ध्यान करब, ... खाएब-पिअब आ' ... फेर हम अहाँकेँ शहर देखाबए ल' जाएब।"

स्टेशनसँ बाहर ओतेक भीड़भाड़ आ' ठेलमठेल तँ नहि मुदा नीक चहल-पहल, हल्ला-गुल्ला आ' दौड़-धूप अवश्ये रहैक। स्टेशनक पछबरिया इनारपर चारुकात सयो आदमी रहल हएतैक – केओ पानि घिचैत तँ केओ भरैत, ... केओ नहाइत तँ केओ दाँतकेँ दतमनिसँ रगड़ैत। ... बहुतो ओहिना बहुत व्यस्त जकाँ घोलघालमे लागल चिचिआ रहल छल। इनारेलगक एकगोट हलुवाईक दोकानपर पुरी छना रहल छलैक। एकटा छौंड़ा हात घुमाघुमाकए बीच-बीचमे गहिंकीसभकेँ सोर क' रहल छलैक, – "आउ ... आउ ! शुद्ध घीकेर पुरी खाउ !! पेंड़ा लड्डू ... !" सटले हलुवाई स्टुलपर बैसल कराहीमे खौलैत घीसँ फटाफट खूब फूलल गमगम करैत पुरीसभ छानि रहल छल आ' उपर काठक चौकीपर बैसलि प्रायः ओकर कनियाँ पुरी तौलि रहलि छलैकि। मिसरजी शायद हमर लोभाएल भावकेँ तारि गेल छलाह। ओ हमरा कहलन्हि, – "मोदिआइन ओतए खूब स्वादिष्ट भोजनसभ भेटैत छैक। ... दामो कम !"

स्टेशनसँ बाहरक दृश्यकेँ घुरिघुरि क' देखैत हम मिसरजीक पाछाँ चलए लगलहुँ। अनगिन्ती एक्का, सम्पत्तिक लेखे नहि। ... बुझाइत छलैक जेना बैलगाड़ीसभक तोड़ सड़कपरसँ कखनो समाप्त नहि होएत। स्टेशनक हत्तासँ सटले उत्तर-दक्षिणदिसि गेल सड़कपर सुर्खी आ' माटिक गर्दा निरन्तर उड़िरहल छलैक। ... तखने एकगोट गाढ़ हरियर पेन्ट कएल चमकैत फिटिन आएल जाहिमे पयरसँ दबादबाकय टन-टन घण्टी बजाओल जा' रहल छलैक। सड़कपर चलैत यान-वाहन आ' लोकसभपर गर्वसँ टनटनाइत !! ... धड़फड़ाकए कात होइत मिसरजी हमरो पिचाएसँ बचबैत कहलाह, – "कात होउ, कात होउ ! राजदरबारक फिटीन गाड़ी छैक।"

दड़िभङ्गा ठीके बहुत बड़का छल, बहुतो नहि सोचल चीज-वस्तु देखि हम उत्सुक आ' भयग्रस्त भ' गेल छलहुँ। स्टेशनसँ सटले बाहर ओहिपार एकगोट विशाल पोखरि रहैक जकर स्टेशन दिसुका कातमे एकलाइनसँ मोदीसभक दोकानसभ छलैक। ... दोकानसभ अर्थात फूसक झोपड़ीसभ। आगाँमे काठक चौकी तैपर ढ़ाकीसभमे भरल छल चूड़ा, भुज्जा, बदाम (चना) अथवा गहुँमक सतुआ, गुड़ आ' किछु पुरान लड्डू, नोन, मिरचाई, आ' कोनो-कोनो दोकानमे दही सेहो सजाकए राखल रहैक। हमसभ ओही दोकानसभमेसँ एक कातक एकगोट दोकानमे पैसलहुँ जकर कर्त्ताधर्त्ता एकगोट नाम

आ' हृष्टपुष्ट कदकाठीक सुन्नरि आकर्षक मोदिआइन छलि। मोदी छल दुब्बर-पातर प्राणी। ... नीच्चा असोराक ओरीयानीमे बीच-बीचमे खोंखैत नारियलक गट्टावला हुक्का सुड़कैत रहैत छल। मोदिआइन अपन दोकानक भोज्यसामग्रीसभक ठीक पाछाँ पलथी मारि बैसलि व्यग्र आ' चिन्तित स्वरमे पिताकए बाजिरहलि छलि, – "वैद्यलग जा क' दवाई लाबक छह कि नहि ? ... कएबेर कहलिऐक जे हुक्कासँ दम आओर फुलतैक मुदा धनसन ...।"

मोदिआइन बीच-बीचमे अपन बड़का डण्टाबला ताड़क पंखासँ एक हाथेँ अपन देहकेँ होंकैत भोज्यसामग्रीसभपर झिनकैत माछी आ' बिढ़नीसभकेँ सेहो भगारहलि छलि। मिसरजी ओकर पतिप्रतिक एकाग्रताकेँ भङ्ग करैत जोरसँ कहलखिन्ह, – "मोदिआइन ... !"

दूगोट गहिंकी (हमरासभकेँ) देखि ओकरि स्वर एकदम कोमल भ' गेलैक, – "आउ, आउ ! ... बहुत दिनपर अएलहुँ ...!"

ओकर उज्जर सुन्नर दाँतसभ चमकि उठलैक। मुह परक मुस्की आत्मीयताक भावक सङ्केत प्रेषित क' रहल छलैक। हमरा देखिते अत्यन्त भावपूर्ण सिनेहसँ ओ बाजलि, – "बौआकेँ बड्ड भूख लागल हएतन्हि। ... देखू तँ, ठोर कोना सुखा गेल छैक !"

हम चट्ट द' अपन ठोरकेँ जीभसँ चाटि भिजएबाक प्रयत्न कयलहुँ। मोदिआइन हमरासभक स्वागतमे चौकीसँ उतरलि। ओकर नमहर काठी तखन खुलि क' स्पष्ट भ क' आएल। स्थूल नमहर शरीर, ढ़ोढ़ीसँ उपरेक बिना बटमबला बड़का गलाक छिटक बलाउज; पेटक कनेक नीच्चे एकगोट गिरहपर अँड़ल एगारह हाथक नील साड़ी, चाकर-चाकर तथा विभिन्न आकार-प्रकारक कानमे, गड़मे आ' पएरमे चानीक गहनासभ, हातमे बरोबरि नीच्चा सड़कैत बाजुबन्द आ' बेरबेर फुजैत खोपा सम्हारएलेल उठैत हाथ – एहन रहए मोदिआइन। एहन नाम मौगी प्रायः नहियेँ भेटत। सेहो विहारक उत्तरी भागमे जतए मनुखक आकार सामान्यतया मझोल होइत छैक भेटक तँ गप्पे व्यर्थ। कनेक काल हम टकीटकी लगाकए देखिते रहलहुँ। ओ झुकलि आ' हमर काँखतरक मोटरी ल' लेलकि। ओकर बड़का-बड़का कारी-कारी आँखि, सुन्नर आ' समटल कारी भौं तथा पपनी, ... मुहक रंग तँ कारिये मुदा गढ़नि अत्यन्त नीक रहैक। स्वस्थताक चमकिसँ भरल-पूरल चमकैत मुह बीच-बीचमे ओकर हँसनाईसँ आओर निखैरि जाइत छलैक। मोदिआइनक सामान्य मुस्कीयोमे ओकर पातर लाल ठोर आओर लाल भ' जाइत छलैक जाहिसँ ओकर सौन्दर्य आओर बढ़ि जाइक। ... हाथ-पएर, ... बाँहिसभ पुष्ट आ' आकर्षक छलैक। ... ओतहि नीचा खोंखैत चोटकल गाल घोकचल कल्लाबला बैसल आदमीक धँसल छाती आ' हड्डी-हड्डी देखाइत शरीरकेँ देखि बुझाइत छलैक जेना ओ दुनू साँयबहु नहि भिन्न काल तथा स्थानक प्राणीसभ होए। ... हमरा एखन मोन पड़ैअ',

ओकरासभकेँ धियापुता नहि रहैक। ... किएक तँ हम ओतए कोनो नेनाभुटकाकेँ नहि देखलहुँ। ... शायद तैं मोदिआइनपर उमेरक तेहन प्रभाव नहि पड़ल छलैक। पता नहि, मोदिआइनक उमेरे कम छलैक अथवा बेशी होइतो बुझएमे नहि आबिरहल छलैक। ... इहो भ' सकैछ जे ओकर उमेर यथार्थमे कम रहल हएतैक मुदा देखएमे कनेक बेशीये बुझाइक। बात चाहे जे होउक मुदा ओकरामे दुनू चीज देखाइक – परिपक्वतो आ' जुआनीक कोमलतो।

हमराप्रतिये ओकर व्यवहार अत्यन्त आत्मीय छलैक। ओ हमरा पुछलकि, – "बौआ, दड़िभङ्गा पहिलबेर अएलहुँ अछि ?"

हम मुड़ी डोलबैत 'हँ' कहि देलिऐक।

एखनतक मिसरजी अपन मोटरीसँ धोती बाहर निकालि कोंचिया नेने छलाह। मोदिआइन हमरो कहलकि, – "अहूँ नहाएलेल चलि जाउ ! लगेक हड़ाहा पोखरिमे चलि जाउ। ... पानि शीतल आ' निर्मल छैक, मुदा कातेमे नहाएब ! बेशी दूर नहि जाएब। ... बड्ड गहींर अछि हड़ाहा !"

मोदिआइनक बातपर अनायासे हमर मुह फुजि गेल। हम गर्वसँ कहलिऐक, – "हमरा हेलए अबैत अछि ।"

ओ हमरा समझओलकि, – "हेलए अबैत अछि से घमण्ड पोखरि, नदी, मोन्हि, बड़का खधिया, दह लग नहि करी। ... एहिसभमे देवताक वास रहैत छैक। गर्वक बोली पसिन्न नहि होइत छन्हि हिनकासभकेँ ! अही हड़ाहा पोखरिमे कतेक अपनाकेँ बुझएबला ... !"

मिसरजी ओम्हर पहुँच गेल छलाह, हमरा सोर कएलन्हि, – "कतेक अबेर करैत छी, बौआ ! जल्दी आउ।"

मोदिआइन बाजलि, – "जाउ, नहाकए जल्दी आउ ! तावत हम चूड़ा, दही, गुड़ आ' मिठाई परसिकए राखि दैत छी। हे, कातेमे नहाएब ! कातेमे ... ! !"

ठीकेमे ओहन पोखरि हम कहियो नहि देखने रही। पूर्वरिया भीड़पर ठाढ़ भ' पछबरीया भीड़दिसि तकलापर ओम्हुरका लोककेँ ठीकसँ चिन्हनाई मुश्किल छलैक। ओहिपार आम आ' सिसोक एकटा घन फुलवारी रहैक। हड़ाहा वास्तवमे अथाह आ' गहींर छल हएत। पूर्वरिया भीड़ स्टेशनदिसि भेलाक कारणेँ प्रयोगमे छल। उतरबरिया भीड़पर दने सड़क भेलाक कारणेँ ओम्हरो घाट बनल रहैक, मुदा पछबरिया आ' दछिनबरिया भीड़पर जङ्गल-झार आ' फुलवारीएटा रहैक।

घाटपर अङ्गा निकालैत काल हमरा मोदिआइनक चेताओनी मोन पड़ि गेल। ओ स्पष्टे ईहो झलकओने छलि जे बहुतो आदमी एहिठाम डुबि क’ मरि गेल अछि। हेलएमे तेजसभ सेहो। ओ एहिमे बसल देवतासभक बारेमे सेहो चेतओने छलि। हमहुँ एहि अपरिचित स्थानमे कातेमे नहाएब उचित ठनलहुँ। आकाशमे एकबेर मेघक छोटका टुकड़ी पोखरिपर छाहरि दैत ससरलैक। पोखरिक पानि अनायास ककरो तमसायल मुह जकाँ कारी भ’ गेलैक। तखने बसातक झोंकसँ सेहो ओहि पोखरिक अथाह जलराशि आन्दोलित जकाँ भ’ गेल। लाखों लघु लहरिसभ पूरा पोखरिमे व्याप्त भ’ हिलोरि मारए लागल जेना केओ ककरो एकाग्रता भङ्ग क’ देने होइक आ’ तैं केओ विक्षुब्ध भ’ गेल होए। ... साँचे, हमरा डर लागि गेल। कातेमे चटपट नहाकए हम सोझे मोदिआइन लग फिरि अएलहुँ।

मोदिआइन प्रसन्न मुद्रामे भोजन-सामग्री ओड़िअओने ओकर रखवारी करैति हमर प्रतीक्षा क’ रहलि छलि। पातर पितरिया थारीमे धोअल फुलाएल चूरा तथा ओहीमे दूगोट लड्डू, नोन आ’ गुड़ सेहो राखल छलैक। दही छाँछिमे छलैक।

मोदिआइन बाजलि, – “लिअ’, नीकसँ बैसि क’ खाउ ! मिसरजीक रस्ता देखब आवश्यक नहि। ओ सन्ध्या क’ क’ अओताह। देरी लगतन्हि। बच्चासभमे एकर विचार आवश्यक नहि।”

ओ फेरो बाजलि, – “हड़ाहा पोखरि कतेक नमहर अछि ! ... नहि ? केहन लागल बौआ, अहाँकेँ ? आ’ फेरो पानि कतेक कञ्चन तथा शीतल छैक नहि ?”

हम पुछलिऐक, – “मोदिआइन, हड़ाहा पोखरिमे देवता रहैत छथिन्ह ? घमण्डीपर तमसा जाइत छथिन्ह ? ... कतेक आदमी डूबल हएत एखनतक ओहि पोखरिमे ?”

“कतेक ने कतेक ! ... के कहि सकत ? ओ कोनो हलहा आ’ नवका पोखरि अछि से ! ... ओहिमे बड्ड उग्र देवतासभक वास छन्हि। एहि जिल्लामे एहन दोसर पोखरि नहि छैक !”

हमहुँ उत्सुकतापूर्वक समर्थन करैत कहलिऐक, – “हँ, से तँ ठीके। एहन नमहर पोखरि हमहुँ कतहु नहि देखने छलहुँ !

हमरा खाइत देखि मोदिआइन अत्यन्त सिनेहपूर्वक निहारैति आगाँ बाजलि, – “बौआ, अहाँ की करैत छी ? पढ़ैत छी कि नहि ?”

हम कहलिऐक, – “पढ़ैत छी।”

ओ घुसकिकए लग आबि फेर पुछलकि, – “की पढ़ैत छी, बौआ ?”

“ए... बी... सी... डी... !”

“पढ़िकए की करब ?”

घरमे जेना हम अखनतक कहैत आएल छलिऐक तहिना निर्भिक भावेँ हम ओकरो कहलिऐक, – “बड़का आदमी बनब ।”

ओ फेरो पुछलकि, – “केहन बड़का आदमी ?”

हमरा एहन प्रश्नक उत्तर ज्ञात नहि छल। चुपचाप खाइत रहलहुँ। ओ लगेमे स्थिरसँ बैसलि रहलि आ’ बाजलि, – “... बडका आदमीसभ नहि जानि कतेक किसिमक होइत अछि ? मुदा नीक आदमी सभतरि एक्के प्रकारक भेटत ! बड़का बनए दिसि नहि जाउ। बौआ, नीक बनक कोशिश करु। ... नीक !”

कातसँ खोंखैत मोदी नकिआइत कहलकैक, – “मोदिआइन, ई तोहर कोन आदति छौक ? ... सभकेँ ई उपदेशे देमए लगैत अछि !”

तावत मिसरजी सेहो नहा-धो क’ आबि गेल छलाह। मोदिआइन फुरफुराकए उठलि आ’ हुनका सम्बोधित करैत बाजलि, – “बौआ भूखाएल होएताह से सोचि हम हिनका दही चूरा खाएलेल द’ देलिअन्हि। अहाँ भानस अपने करब तँ चाउर, दालि, घी, तेल, जारनि आदि सभ ठीकठाक क’ क’ राखि देने छी। चुल्हि सहो फुकि दैत छी। आ’ नहि तँ दहीये चूरा खा लिअ’।’’

मिसरजी कहलखिन्ह, – “आब अखन हमरा भानस करक आँट नहि रहि गेल अछि।”

हुनकालेल दही-चूराक व्यवस्था करएहेतु मोदिआइन चौकीपर चढ़लि।

मिसरजीकेँ खुआ-पीआकय ओ भीतर अपन घरमे गेलि। तखने मोदी सेहो खों-खों करैत ओकरहिं पाछाँ भीतर गेलैक। प्रायः ओहोसभ दिनुका भोजन करए लागल छल।

मुह मे कौर देनहिं मोदिआइन भीतरसँ बाजलि – “कौआ-चील ने कहीं आबि जाई !’’ कने देखबैक। ... हम तुरत्ते अबैत छी।”



हठात् अपन दड़िभङ्गा अएबाक प्रयोजन मोन पड़ितेँ हम व्यग्र भ' गेलहुँ। प्रायः तखन दिनक एगारह बजैत छलैक हएत। शहरबजारक कोलाहल किछु पहरक हेतु शान्त भेल छलैक । स्टेशन शून्यसन छल, सड़कपर गाड़ी वा पैदल यात्री एकाधेटा देखएमे अबैत छलैक आ' सेहो कखनोकाल। चारुकात प्रचण्ड रौदक साम्राज्य छलैक। आकाशमे उपर बहुत उपर चीलसभ उड़िरहल छलैक। दोकानक नीम गाछपर कौआसभ कखनो-कखनो आबिकए कुचरि जाइक। कखनो-कखनो एकगोट बिलाड़ि दोकाने-दोकाने घुमैत छड़पैत नजरि पड़ैक। ... हड़ाहा पोखरिपर सूर्यक प्रखर रौद अनवरत पड़िरहल छलैक, मुदा एखनो मेघक छाँह पड़ितेँ पानि करिक्का रोसनाई जकाँ कारी भ' जाइत छल आ' बसातक छोटको झोंक ओहिमे असंख्य हिलकोरि उठाए पानिकेँ चञ्चल बना दैत छलैक।

हम मिसरजी लग जा' क' जीद्द करए लगलहुँ, – "शहर देखए चलूऽऽ ने !"

ओ आश्चर्यसँ बजलाह – "बाप रे, एहन रौदमे !"

हम जीद्दपर उतरि गेलहुँ तखन ओ दिकिआकए एकगोट एक्का भाड़ापर लेलन्हि। शहरक पूरा परिक्रमाहेतु नहि ... नगरदर्शनक पहिल पड़ावधरिक लेल मात्रहिं ! एक्का हमरासभकेँ राजदरबारतक पहुँचा देलक। ओहिठाम हमसभ उतरि गेलहुँ आ' तकरबाद पैदले देखैत-सुनैत आगाँ बढ़लहुँ । बड़ीटाके विशाल लोहाक फाटक लगसँ हमसभ ओहि लालदरबारकेँ निहारलहुँ जकरा बारेमे रेलगाड़ीमे ओ बूढ़ा कहैत रहथिन्ह जे बनाबएमे डेढ़ करोड़ लागत पड़ल छैक। जाधरि ताकि सकलहुँ तकैत रहलहुँ। ओहि विशाल दरबारकेँ! आ' तहिना ओकर बड़की फूलक बगीचाकेँ जाहिमे रङ्गविरङ्गक शोभा बढ़बएबला गाछ तथा फूलसभ रोपि सजाओल गेल छलैक। फाटक लग ठाढ़ बन्दूकधारी सिपाही हमरासभकेँ डपटलक, – "कथी देखैत छह, भागह एहिठामसँ कीऽऽ !"

तकरबाद हमसभ हथिसार, घोड़सार, असबाबखाना आदि देखलहुँ। एकसँ एक चमत्कारिक वस्तुसभ देखैत सुनैत हमरासभ अन्तमे दड़िभङ्गाक बजारदिसि पैसलहुँ। तहिया दड़िभङ्गा शहर एक्के ठाम स्थित नहि रहैक – मोहल्ला-मोहल्ला, टोल-टोल आ' सेहो सभ अलग-अलग छुटल छिडिआएल जकाँ रहैक। एक ठामसँ दोसर ठाम जाएलेल छोटछीन ग्रामीण खण्डकेँ पार करहिं पड़ैत छलैक – खेत, बारी, ताड़क बड़का-बड़का गाछक पाँतिसभ आ' ओहिमे सटल ताड़ीखानाक एकचारीसभ ! बीच-बीचमे बड़का-बड़का नालीसभमे खदबदाइत गजगज करैत टोल मोहल्लाक गन्दगी। ... शहरक

बाबूसभ खपड़ाबला विशाल बङ्गलाक बरन्डामे भारी, चाकर आ' बड़का-बड़का आराम कुर्सीपर, जाहिमे आधा शरीर सुताकए आराम कएल जाइत छैक, सुतल दूपहरियाक शून्य निहारिरहल छलाह। कखनो-कखनो एकाधटा एक्का अथवा बैलगाड़ी सड़कक माटिकेँ आओर महीन गर्दा बनबैत पास करैत रहैत छल।

दड़िभङ्गा शहरक दिनभरिक लम्बा भ्रमणसँ आँखिमे विभिन्न नव-नव दृश्यसभ संजोगैत मुदा एकदम थाकल ठेहिआएल साँझखन हमरासभ फेरो मोदिआइन लग पहुँचलहुँ । मिसरजी चौकीपर बैसिते ठेहीक कारणेँ नमहर साँस तनलनि। मोदिआइन एक बाल्टीन पानि आ' लोटा दैति कहलकन्हि, – "अहाँसभ थाकि गेल छी। ... हात-पएर धो क' ठेही उतारु ! देखू तँ एहि बौआकेँ, ... बेचारा !"

मोदिआइनक वचन अत्यन्त स्नेहपूर्ण रहैक। ततबे स्निग्धता नजरि आ' भावमे सेहो छलैक। मिसरजी उठि हाथमे लोटा लैत बजलाह, – "हम कनेक पोखरिदिसि जाइत छी। ओतहि सभ क्रियासँ निवृत भ' जल्दीये आएब। तकराबाद हमरा काजसँ बाहर जएबाक अछि।"

हमहुँ पोखरिदिसि जाएलेल उठलहुँ। मुदा मोदिआइन हमरा रोकि लेलकि, – "एखन पोखरि जएबाक जरुरी नहि छैक। ... सेहो कुबेरमे। ... आ' फेर अहाँ थाकलो छी !"

हम ओही ठाम पीढ़ीएपर बैसिकए हाथ-पएर धोएलहुँ आ' लगेक अखरे चौकीपर जा क' पलथी मारि बैसि गेलहुँ। मोदिआइन एकगोट बड़का लालटेन लेसलकि आ' लोहाक एकगोट पातर कड़ीमे ओकरा लटका' देलकैकि। तकरबाद एक-एक क' सभ दोकानसभमे इजोत होइत गेलैक। एक्के रत्तीमे साँझ मुन्हारि भ' गेलैक। कीड़ा-फटिङ्गासभक तीख ध्वनि चारुभरिक वातावरणकेँ हड़होड़ए लगलैक। अन्हारमे हड़ाहा पोखरि लुप्त भ' गेल जेना निस्तब्धताक कारी धुधुर चद्दरि ओहि पोखरिपर चढ़िक' पसरि गेल होइक। ओहि कारी निस्तब्धताक चद्दरिपर असंख्य भगजोगनीसभ भक-भक करैत उड़ए लगलैक। हमरा लागल किंवा साँझक अन्हार हड़ाहा पोखरिपर कनेक बेशीये मोटगर भ' गेल छलैक। हम कनेक डेराएल आ' शिथिल स्वरमे पुछलिऐक, – "मोदिआइन, हड़ाहा पोखरि साँझ होइतहिं ... सभ दिन साँझखन क' एहने कारी भ' जाइत अछि ?"

ओ एकबेर हमरादिसि धुमिकए देखलकि। अन्हारक कारणेँ शायद, हमरा बुझाएल जेना ओ बहुत दूर होए आ' दूरहिंसँ एकटक हमरा निहारिरहलि होए। कनेक दोसरे रङ्ग लागल। मुदा लगलेक ओकर स्नेहयुक्त स्निग्ध वाणीसँ हम आश्वस्त भ' गेलहुँ, – "बौआ, हड़ाहा एकगोट विशेष प्रकारक पोखरि अछि !"

हम पुछलिऐक, – "केहन विशेष प्रकारक... ?"

ओ बाजलि, – "बहुत प्राचीन पोखरि अछि ई !... ... महाभारतेक समयक थिक। तहिया एतय आटव्य जङ्गल रहैक जकरा बीचमे रहैक एकगोट छोट डबड़ा !"

"तखन?"

"धीरे-धीरे जङ्गल फँड़ाइत गेलैक। गामक बढ़ैत क्षेत्र आ' लोकसभ जङ्गलकेँ कटैत ठेलैत गेल। कालान्तरमे अहू ठाम वस्ती बैसि गेलैक। बादमे दड़िभङ्गाक एखुनका महाराजक पुरखासभ एकरा अपन जिमदारीमे समावेश क' लेलन्हि।"

मोदिआइन एकहि सुरमे सुरआएल बजैति गेलि। हम अत्यन्त थाकल छलहुँ तथापि ओकर सुरआएल स्वरसँ सम्मोहित जकाँ होइत गेलहुँ । ओ बजैति गेलि, – "जहिया ई चारुकात झारेझारसँ घेरल एकटा छोट डबड़ा जकाँ छलैक, नित्य अही पोखरिक मोहारपर बैसिकए एकगोट मलाहिन माछ बेचैति छलि। ... मलाहिन नाम, हृष्ट-पुष्ट, सुन्नरि आ' आकर्षक छलि। जेना तहिआ प्रचलित रहैक ओकर पूरा देह चानीक गहनासँ छाड़ल रहैत छलैक। ओकर घर कतए रहैक, ओ कतए माछ मारैति छलि से ककरो ज्ञात नहि रहैक मुदा ओकर माछ होइक नीक !... तैं ओकरा ओहिठाम बैसिते देरी माछ फटाफट बिका जाइक। ओ हमरा चुपचाप निसाएल टकटकी लगाकए देखैत आ' सुनैत देखि बीच्चेमे रुकि गेलि आ' पुछलकि – "सुनैत छिऐक, बौआ !"

हम कहलिऐक, – "तखन फेर, मोदिआइन ?"

"जेना कि सभ दिन ओ करैति छलि एकदिन ओ माछ ल' क' पोखरिक मोहारक अपन निश्चित स्थाानपर आबिकए बैसलि। ओहि दिन ओकर डालामे एकटा बड़का रोहु माछ रहैक। तखने दड़िभङ्गा राजाक एकगोट नामी तान्त्रिक पोखरिमे नहाकए दुर्गा कवच पाठ करैत ओही द' क' जा रहल छलाह। ओ लाल धोती, लाल कमीज आ' टोपी सेहो लाले पहिरने छलाह। मलाहिनक डालीक बड़का जुआएल रोहु हुनका खूब नीक लगलन्हि। ओ ओहि रोहु माछकेँ किनि लेलन्हि। एतेकटा बड़का माछ एक्के आदमीकेँ किनैत देखि मलाहिन बड्ड हर्षित भेलि। ओ हँसैति अपन खुशी व्यक्त करैति पण्डितजीकेँ कहलकन्हि, – "आई तँ अहाँक भरि घरक हेतु ई पर्याप्त आ' भरिपोख हएत।"

"मलाहिन जखन हँसलि तँ ओकर सजल मिलल सुन्नर चमचम करैत दाँतसभ ओकर सौन्दर्यकेँ आओर चमका' देलकैक। ठोरसभ रसाएल आ' लाल भ' गेलैक। तान्त्रिक ओहि सुन्नरि नारीकेँ एकटक देखिते रहि गेलाह। तखने एकटा चील तान्त्रिकक हातक माछकेँ झपटिकए छिनि लेलक आ' उड़ि गेल। मुदा माछ भरिगर रहैक तैं चील दूर नहि ल' जा सकल। पचासे डेगधरि ल' गेल

होएतैक कि माछ खसि पड़लैक। मलाहिन फेर एकबेर हँसलि। तान्त्रिक खूब निहारिकए ओहि मलाहिनकेँ देखलन्हि। हुनका लगलन्हि जेना हँसीक पाछाँ नुकाएल चेहराक मुख्य भाग वेदनासँ भरल कोनो प्राचीन नारीक छलैक खाली हँसीयेटा ताजा आ' अखुनकाक ...।"

जेना तान्त्रिककेँ एकाएक कोनो गम्भीर रहस्य बुझा गेल होइन्ह ओ मलाहिनदिसि तकैत पुछलखिन्ह – "मलाहिन, तोँ किएक हँसलह ?... तोँ के छह ?"

"मलाहिन बाजलि, – "हम केओ होइ ! ताहिसँ अहाँकेँ की ? हँसलहुँ एहि दुआरे जे कलियुगमे आदमीएटा नहि खिआएल पशुपक्षी सेहो खिआ गेल। देखिऔक ने, ओहि एकटा रोहुकेँ चील उड़ाकए नहि ढोअ सकल। तहियाक मनुखसभ फराक्रमी आ' हाथी जकाँ शक्तिशाली होइत छलाह। पशुपक्षीसभ सेहो ओहने बलुआर होइत छलैक। महाभारतक कालमे एकटा चील कुरुक्षेत्रसँ एकगोट योद्धाक शरीरकेँ उठाकए अही ठाम खधियामे फेंकने छल। ... कहाँ कुरुक्षेत्र आ' कहाँ दड़िभङ्गा ! कतेक दूर ! आ' सेहो एकगोट योद्धाक भारी शरीर उधैत एतए तक उड़ब ! कतेकटाक चील होइत छल हएत तहिया। कतेक बलशाली रहल हएत !"

"तान्त्रिक फेर पुछलखिन्ह, – "तोँ छह के ? तोँ ईसभ बात कोना बुझलह ?"

"मलाहिनक मुस्कान हठात् हेरा गेलैक आ' मुह विषादसँ कारी भ' गेलैक। ओ अपन डाला उठा लेलकि, – "हम केओ होइ ताहिसँ अहाँकेँ कोन प्रयोजन ...?"

"तान्त्रिक किंचित अधिकारपूर्वक किछु बाजक प्रयत्न करिते छलाह मुदा मलाहिन अटेरैत आगाँ बढि गेलि। तान्त्रिक आगाँसँ बाट घेरैत रहस्य उदघाटित करक उद्देश्यसँ कड़कैत बजलाह, – "मलाहिन, थमह ! तोँ के छह से बिना बतओने नहि जा सकैत छह ! तोरा हम नहि जाए देबह।"

"मुदा ताधरि मलाहिन बिला गेलि छलि। ने तँ ओतए कोनो मलाहिन रहैक ने ओकर डाली। खाली तान्त्रिकक कड़कैत ध्वनि किछु कालधरि वातावरणमे गुञ्जैत रहल आ' किछुए आगाँ खसल पड़ल ओ रोहु माछ बीच-बीचमे चमकैत रहलैक।"

हम अत्यन्त व्यग्रतासँ पुछलिऐक, – "तखन फेर की भेलैक, मोदिआइन ?"

"की होइतैक ? ओतएसँ तान्त्रिक धड़फड़ाइत सोझेँ राजदरबार गेलाह, राजाकेँ सम्पूर्ण वृतान्त सुनोलन्हि। आ' फेर तखन तान्त्रिकेक सलाहपर एहि खधियाक उत्खननक निर्णय भेल रहैक। ओहिमे महाभारत कालक योद्धासभक शरीरक कोनो हाड़ भेटतैक की से सोचि ! पाँच हजार जन छओ महीनातक एकरा खनिते रहि गेलैक। बहुतो हाड़खोर भेटलैक। सभकेँ गङ्गाजीमे अनुष्ठानपूर्वक

प्रवाहित कएल गेल – जेना फुलाक बिर्सजन होइत छैक। तहियासँ ई खधिया उत्खननक कारणेँ एहन बड़का पोखरिक रुपमे परिणत भ' गेल। किएक तँ एहिमे बहुतो हाड़खोर भेटल रहैक तैं एकर नाम बादमे हड़ाहा पोखरि भ' गलैक।"

अत्यन्त उत्कण्ठासँ हमर स्वर सुखा गेल छल, – "तखन ?"

मोदिआइन बाजलि, – "यएह छैक अहि पोखरिक कथा। आब अहाँ खा पी क' सुतू। थाकल छी।"

थाकल तँ हम ठीके रही। भरि दिनक शहर प्रदक्षिणाक कारणेँ शरीर गलिकए क्लान्त भ' गेल छल। थकानक कारणेँ बीच-बीचमे आँखि सेहो निन्नसँ मुना जाइत छल, मुदा मलाहिनक कथे एहन छलैक जे बेर-बेर उताहुल आ' उत्तेजित क' दैत छल। ततबेमे सन्ध्या समाप्त क' मिसरजी दोकानमे प्रवेश कएलन्हि आ' मोदिआइनकेँ कहलखिन्ह, – "मोदिआइन, बौआकेँ बढ़ियाँसँ खुआ-पिआकए सुता देबन्हि। हम ओम्हरे खा' लेब। राति अबेर क' फिरब। दू स्टेशन आगाँधरि जएबाक अछि। गाड़ी सेहो आबक समय भ' गेल छैक। तैं हम आब जाइत छी।"

हम दौड़िकए हुनका लग पहुँच गेलहुँ आ' जीद्द करएलगलहुँ, – "हमहुँ जाएब ...।"

मिसरजी एहिबेर कहुना तैयार नहि भेलाह। मोदिआइन सेहो समझओलकि, – "कहाँ जाएब थाकल-ठेहिआएल शरीर ल' क' रातिमे ...। चारि-पाँच घण्टामे मिसरजी चलिए अओताह। चलू, खा क' सुतू। भाँटाक तरुआ बना दैत छी, दूध आ' भात खा लिअ' ...।"

मिसरजी स्टेशनदिसि बिदा भ' गेलाह। मोदिआइन चुल्हिमे बैसिकए भाँटा तड़ए लागलि। भितरका कोठरीमे मोदी बैसल खोंखिरहल छल। हम कनेक काल एकसरे चौकीपर बैसल अन्हारमे डूबल दड़िभङ्गा शहरकेँ देखैत रहलहुँ। बीच-बीचमे सोझे मलाहिन ठाढ़ भ' जाइत छलि। हम सोचए लगलहुँ ... अखन रातुक एहि निस्तब्ध अन्हारमे जे पोखरि हेराएल विलीन अछि तकरे एक कातमे ओ बैसति छलि हएत ... अही दोकानक घराड़ी लग कतहु ! हम चौकीपर बहुत कालधरि नहि बैसि सकलहुँ। ससरिकए चुल्हिदिसि मोदिआइन लग पहुँचि गेलहुँ । मोदिआइन बाजलि, – "बौआ, भूख लागि गेल ?... बैसू ! आब लगचिआ गेलैक, कनेक्के देरी अछि। तुरत्ते सभ किछु तैयार भ' जाएत।"

हम कहलिऐक, – "मोदिआइन, महाभारत कालक लोक कहुँ एतेक दिन तक जिअत ? साँचे रहैक ओ मलाहिन ?"

ओ बाजलि, – “किया नहि जीअत ? प्रेतात्माक रुपमे जुगजुगान्तरतक जिबैत अछि लोक। अपन प्रियजनसभक लगमे रहए चाहैत अछि। कोनो ने कोनो पिआस, कोनो ने कोनो पूरा होमएसँ बाँकी कामना भीतरी आकांक्षा ओकरासभकेँ अमर जकाँ मृत्युलोकमे दृश्य-अदृश्य राखि घुमारहल रहैत छैक।”

हम धड़फड़ाकए पुछि बैसलिऐक, – “तँ अखनो होएतैक ओ मौगी ?”

मोदिआइन तरकारी नीचा उतारैत बाजलि, – “होएतैक ! ... लिअ, अहाँ खाउ !”

ओ उठिकए पीढ़ी अनलकि आ’ हमरा बैसएलेल देलकि। एकदम नया स्थान आ’ परिवेशमे अपरिचितसनक महिलाद्वारा देल गेल दूध, भात, गुड़ आ’ भाँटाक तरुआ खाइत हमरा किछु कोनादन आ’ असहज जकाँ लागल। असगरपनक अनुभव भेल। घर मोन पड़ि गेल। माय-बाबु, भाय-बहिन सभ केओ याद आबि गेलथि। अखनतक तँ सभ केओ खा’ क’ सुतिरहल होएताह। नहि जानि, मिसरजी कखन घुरताह ? आ’ कत्तहु नहि अएलाह तखन ? हमर मोन घबड़ाए लागल। हमरा सुतए लेल एकगोट कम्मलपर नील रङ्गक चद्दरि मोदिआइन ओछा देने छलि। एकटा मैल तकिया ओहिपर रखैति ओ चौकीये परसँ हमरादिसि तकलकि आ’ बाजलि, – “बौआ, खाउ ने ! किया ने खाइ छी ? जल्दी-जल्दी खाउ। भरिपेट खाएब। या’ देखू, ओछाओन ओछा देलहुँ अछि। ... अहाँक सुतएलेल।”

हम जल्दीये खा क’ उठि गेलहुँ आ’ हाथ धो क’ ओछाओनपर पड़ि रहलहुँ । मोदिआइन भाड़ा-वर्त्तन माँजि आङ्गनमे गोलियाकए राखि देलकि। तकराबाद ओ एकगोट डिबिया लेसिकए चुल्हि लग राखि देलकि आ’ लालटेनकेँ मिझा देलकि। आब ओहिठाम चुल्हि लगक एकगोट धुआँ उगलैत लाल धधड़ाबला डिबियाक क्षीण प्रकाश मात्रहिं रहैक। बाहर निर्जन निस्तब्ध रात्रि आ’ असंख्य कीरासभक तीख महींन आवाज व्याप्त छलैक। मोदिआइन एकबेर कोठरीमे चारुभर घुमिकए देखलकि। शायद सभ किछु ओकरा ठीकेठाक लगलैक। ओ बाजलि, – “हँ, तँ आब सुतू। डर तँ नहि लागत ने, बौआ ?”

हम भीतरसँ साहस बटोरिकए कहुना मुड़ी हिलबैत कहलिऐक, – “नहि, हमरा डर नहि लागत !”

जाइत-जाइत ओ फेर बाजलि, – “हम सटले भीतुरका कोठरीमे छी। जरुरी बुझाएत तँ मोदिआइन कहि क’ सोर करब। ठीक छै. ... ?!”

ओकरा जाइते जेना राति आओर निस्तब्ध भ’ गेल होइक।

डिबियाक लाल शिखा कखनो-कखनो हिलि जाइक तँ कोठरीमे सभ किछु – सम्पूर्ण छाँहसभ सेहो हिलए लगैक। भीतपरक छाँहसभ, ढ़कियाक, मोटरीक, लाठीक, बोराक छाँहसभ कखनो-कखनो दहिन-बाम करैक, हिलोरि मारिकए झुलैक तँ कखनो एक्के ठाम थर्थराए लगैक। डिबियाक बाती कखनो चट-चट क' क' चरचराइक तथा बातीक मुँहपर कारी गिरह बनि जाइक। ... खाली धुआँक मोटगर रासि चारुदिसि चढ़ैत उठैत रहैक। ... धीरे-धीरे हमरा मोनमे डरक सञ्चार होमए लागल। एना एकसर हम कहियो नहि सुतल रही। मलाहिनक खिस्सा ओहिना स्पष्ट देखाए लागल। ... हमर हृदय डरसँ काँपय लागल। देहक सभ रोइयाँ काँट जकाँ ठाढ़ भ' गेल। ... तखने लागल जेना बाहरक निस्तब्धता भङ्ग भ' गेलैक आ' पानिमे केओ छपाकसँ कुदलैक। हमरा बड्ड डर भ' गेल आ' हम जोड़सँ चिचिअयलहुँ, – "मिसरजी ... ... !"

मोदिआइन भीतरेसँ पुछलकि, – "की भेल, बौआ ?''

हम कहलिऐक, – "हड़ाहा पोखरिमे केओ छपाकसँ कुदलैक अछि ...।"

ओ हमरा अन्ठाकए सुतक लेल कहैति बाजलि, – "सुतू , सुतू। ... पानिमे माछ कुदलैक अछि !"

मोदी एकभरसँ खोंखिरहल छल। बुझाइत छलैक जेना ओ अखने मरि जएतैक। मोदिआइन नहि जानि कथी बाजलि आ' मोदीक छातीपर मालिस करए लागलि। मोदी घेघिआइत बजलैक, – "ओह ! ... बाप रे ! ... एहिसँ तँ मरि जइतहुँ ...।"

मोदिआइन कनेक पिताइत कहलकैकि, – "मोदी ! रातिमे ई की अमङ्गल बात बजैत छह। ... मालिससँ तोरा दम फुलनाई कम भ' जएतह। कहुना सुति रहह।"

कनेक कालक बाद भीतर कोठरीक हलचल शान्त भ' गेलैक। अन्ततः ओसभ शायद सुतिरहल छल। मोदीक साँस भारी आ' घेघिआइत चलि रहल छलैक। रातुक भयावह निस्तब्धता, डिबियाक प्रकाशक छोट घेराक बाहर चारु तरफकेर अन्हार गुजगुज परिवेश, निशाचरी कीरासभक तीख आ' महींन ध्वनिक गुञ्जन तथा एम्हर-ओम्हर हिलैत- डोलैत आ' थर-थर करैत छाँहसभ। ... हम फेर भयभीत होमए लगलहुँ । मस्तिष्कमे बेरि-बेरि उत्पन्न होइत मलाहिनक प्रेतात्माक कल्पनाक चित्रसँ हमर दम फुलए लागल। ... दिनभरिक बौअइनीक कारणेँ शरीर ओहिना थाकल आ' मलीन छल, आँखि भारी छल, झपलाइत छलहुँ मुदा डरसँ निन्न भ' नहि रहल छल। आँखि लगिते कनेक सपना जकाँ देखाइत छल आ' फेर डरसँ निन्न टुटि जाइत छल। ... जागलोमे आ' सपनोमे एकहि

रङ्गक डराओन आकारसभ आगाँ ठाढ भ' जाइत छल। हम फेर एकबेर जोड़सँ डेराकए चिचिआ' उठलहुँ, – "मिसरजी ... !"

मोदिआइन 'की भेल ? ... की भेल ?' कहैत दौड़लि आएलि। मोदी खोंखिते रहए। मोदिआइन बाजलि, – "बौआकँ डर लागि गेलन्हि। ... बेचारा ! अच्छा कोनो बात नहि, हम अहीं लग बैसैति छी।"

मोदिआइनक हमरालग अबिते हमर डर आब पूरे हेरा गेल छल। निन्न धीरे-धीरे जाँतय लागल छल कि मोदिआइन पुछलकि, – "बौआ, खिस्सा सुनक मोन करैत अछि ? सुनब तँ सुनाउ !"

हम हुलसिक' कहलिऐक – "सुनाउ ने, मोदिआइन !"

मोदिआइन कथा सुनाबए लागलि। जेना कि ओकर आदत रहैक ओ एक्के सुरमे बजैति चलि जाइति छलि। हमरा बुझाए लागल जेना दूरसँ ककरो स्वर लगातार हमर कानमे पड़िरहल होए। ... डर हेरा' गेल छल तैं आब घरक भीतपरक हिलैत-डोलैत छाँहसभ खेल आ' कौतुक जकाँ लागए लागल छल। ... दिनभरिक परिश्रम रग-रगमे निन्नक सञ्चार क' रहल छल। हड़ाहामे बीच-बीचमे छप-छप सेहो होइत रहलैक जे हमरा दूरसँ अबैत पृष्ठभूमिक आवाज जकाँ लगैत रहल। ... स्टेशनपरक भिनसुरका कोलाहल, हुलिमालिक दृश्य, लालदरबार, हथिसार आ' शहरक अन्यान्य दृश्यसभ हमर थाकल मस्तिष्कसँ रङ्ग जकाँ धोआइत मलीन हुअए लागल। ... बीच-बीचमे हम औंघाइयो जाइत छलहुँ । सपनामे चित्रसभ एकटापर दोसर-तेसर अबैत पड़ैत देखाए लगैत छल। आ' अही बीचमे मोदिआइन निरन्तर अपन सुरमे हमरा खिस्सा सुनारहलि छलि। ओकर स्वरमे सम्मोहन छलैक। बिहारिक पश्चात् जेना बर्षाक बुन्नसभ खसैत रमणगर लगैत रहैत छैक, ठीक तहिना हमर कानमे ओकर कोमल महीन आवाज टपटप क' पड़िरहल छलैक। ओ कहैति गेलि, – "बहुत पहिनेक गप्प थिक। बहुतो पहिनेक। ... भारतबर्षमे हस्तिनापुर नामक एकगोट बड़ीटा राज्यक राजधानी रहैक। ओतक राजा रहथि धृतराष्ट्र – बूढ़ आ' आन्हर ! ... आन्हर रहथि तैं गद्दीपर नहि बैसि सकलाह। परिणामस्वरुप राजा बनक प्रश्नपर हुनक बेटा आ' भातिजसभमे कलह मचि गेलन्हि। ... धृतराष्ट्रक रानी गान्धारी अत्यन्त पतिव्रता रहथिन्ह। जहिना हुनक पति अपन आँखिसँ विश्वक सुन्दर रचना देखएमे असमर्थ रहथिन्ह तहिना ओहो अपन आँखिक उपयोग नहिएँ करब उचित बुझलन्हि आ' तैं सदैवक हेतु अपनो आँखिमे पट्टी बान्हि लेलन्हि। हुनका एक सय बेटा भेलन्हि जे बादमे धृतराष्ट्रक पट्टी कौरव कहाएल। जेठकाक नाम रहन्हि दुर्योधन। ... धृतराष्ट्रक पाँचटा भातिज। सभसँ जेठ रहथिन्ह युधिष्ठिर। ई पाँचो भाई पाण्डव कहएलाह। ... बेटा आ' भतिजामे

राजक लेल कलह बहुत बढ़ि गेलाक कारणेँ धृतराष्ट्र बूढ़-पुरानसभसँ सरसलाह क' भतिजासभक हेतु अलगे राज छुटिया क' दोसर राजधानीक बना देलखिन्ह, इन्द्रप्रस्थ !"

"हस्तिनापुरसँ उत्तर-पूर्व खाण्डवप्रस्थ जङ्गलकेँ फाँड़ि इन्द्रप्रस्थक स्थापना कएल गेल छल। ओहिसँ पहिने खाण्डवप्रस्थक जङ्गलमे विभिन्न जातिसभ अपन-अपन वस्तीमे निवास करैत छल। ओहीमे बहुतो ठाम आर्य परिवारसभक वस्तीसभ सेहो रहैक। इन्द्रप्रस्थक स्थापनामे ई सभ वस्तीसभ उजड़ि गेल। जङ्गलक आदिवासीसभ तँ उत्तरभर भीतर आओर घनगर जङ्गलमे चलि गेल मुदा नया नगरक स्थापनासँ खेती-पाती क' क' बसल परिवारसभ बहुत कठिन परिस्थितिमे फँसि गेल। घरदुआर उजड़ि गेलैक। ... उजड़ल बेघर परिवारसभमे एकगोट क्षत्रिय परिवार सेहो रहैक। ओहि परिवारमे एकगोट बालिका छलि जकर नाम ... जकर नाम ... जकर नाम ... अच्छा, राखि लिअ' रहैक नारी ! नारी माने बुझैत छिऐक, बौआ ?"

"हम किआ ने बुझबैक, नारीक अर्थ छिऐक – मौगी !"

मोदिआइन बाजलि, – "हँ ..., नारी माने हमरे सनक मौगी ! बौआ, अहाँ तँ बहुतो बुझैत जनैत छिऐक !"

बड्ड संतोष भेल। मोदिआइनक प्रशंसा हमरा प्रफुल्लित क' देलक। ... आँखि निन्नसँ भारी भ' गेल छल। घरोमे मायसभ सुतए कालमे एहने खिस्सासभ कहैत रहए आ' सुनिते-सुनिते हम निन्न पड़ि जाइत रही। अखनो हमरा घरे जकाँ नीक लागिरहल छल। जेना हम घरेमे खिस्सा सुनि रहल होइ। साँचे कही तँ हमरा लागल जेना इएह कथा हमर माय हमरा कहियो सुनोने रहए। हमरामे आहलादक निसा चढ़ैत चलि गेल, एकगोट अवर्णनीय आनन्दमे सन्हिआइत चलि गेलहुँ । हम सभ किछु बिसरि गेलहुँ, खाली मोदिआइनक कोमल कण्ठेटाक आवाज आ' ओहि आवाजद्वारा चित्रित भ' रहल कथाक दृश्यसभ हमर चेतनामे बाँकी रहि गेल।

"... नारी तहिया एकगोट छोटि नग्निका बालिका छलि। इन्द्रप्रस्थकेँ राजधानी बनाबएलेल असंख्य लोकसभ ओतए आबए लगलैक। भीड़ बढ़ए लगलैक। रातिदिन एक क' काज आगाँ बढ़ैत गेलैक। ... धीरे-धीरे नम्हर-नम्हर विशाल भवनसभ ठाढ़ होमए लागल। फुलवारी-वाटिकासभ लगाओल सजाओल गेल। मूर्तिकारसभ सुन्दर आ' नीक-नीक आकर्षक मूर्तिसभ गढ़ि-गढ़ि क' विभिन्न स्थानसभपर ठाढ़ कएलन्हि। इन्द्रप्रस्थक शोभा आ' सुन्दरता इन्द्रपुरीकेँ सेहो मात करए लागल। ... नव निर्मित नगरमे नव-नव वस्त्राभूषणधारीसभ आबिकए रहए लगलाह। गान-बाजानसँ नगर बजार रमणीय भ' गेल। बहुतो हाथी, घोड़ा, सजल-बजल बड़का-बड़का रथसभ आएल। अस्त्र-शस्त्रसँ सुसज्जित वीर रक्षकीसभ सेहो आएलि। बालिका नारी विस्मित भए आँखि फारि-फारिकए एहि सभ

विराट परिवर्त्तनकेँ निहारति रहलि। सड़कपर नाङ्गटि कुदैति, अपनेसनक अन्य बाल-बालिकासभक हुलिमे एतएसँ ओतए दौड़ैति नया-नया चमत्कारिक दृश्यसभक ओ अवलोकन करैति गेलि। ... मुदा ओकर माय-बापक स्थिति किछु भिन्न रहैक। ओसभ अत्यन्त दुखित रहथि। घर-घराड़ी सभ किछुक हरण भ' गेल छलन्हि। नगर स्थापनाक क्रममे बहुतो लोक जन-मजूरीमे लागि गेल रहए आ' कतेक दोसर पेशाकेँ अङ्गीकार क' नेने रहए। बहुतो महिलासभ गणिका वृतिमे चलि गेलि छलि। पेट तँ कहुना येनकेन प्रकारेण पोसा जाइत रहैक मुदा अपन स्वतन्त्र खेती-पातीमे लागि आएल ओतक पूर्वनिवासी खेतिहर वृतिबलासभ अत्यन्त दुखित आ' क्षुब्ध छल। तथापि नियतिकेँ स्वीकारब छोड़ि दोसर कोनो उपाय बाँकी नहि रहैक।

एक दिन अभूतपूर्व शोभा-सिन्दूरक आयोजन भेलैक आ' पाण्डवसभ नगरमे प्रवेश कएलथि। ओही दिन ओसभ गृहप्रवेश सेहो कएलन्हि ! बड्ड हुलि, बड्ड लोक – बड्ड विशाल आयोजन रहैक ! अनेकन् यज्ञ भेल, ब्राह्मण आ' पुरोहितसभ उच्च कण्ठसँ वेदक पाठ कएलन्हि। अस्त्र-शस्त्रक प्रदर्शन भेलैक। उपस्थित सैनिक आ' नागरिकलोकनि पाडण्वसभक जयजयकार कएलखिन्ह। यज्ञ-धूमसँ आच्छादित आकाश बड़ी कालधरि जयध्वनिसँ प्रकम्पित होइत रहल। बालिका नारी अत्यन्त कौतुकमय भ' उत्सुकतासँ एहि सम्पूर्ण आयोजन आ' प्रदर्शनक अवलोकन कएलकि। ओ देखलकि जे पाण्डवसभ अत्यन्त सुन्दर रहथि ...आ' द्रौपदीक रुपक वर्णन तँ सम्भवे नहि छल। ओहुना हरेक घरमे पहिनहिंसँ एकर चर्चा रहैक। ... बालिका नारी छलि तँ बड्ड छोटि मुदा तैयो ओ भाँपि गेलि जे पाँच प्रतापी युद्ध-कुशल पुरुष-रत्नसभक सम्मिलित प्रेमपात्री हएबाक कारणेँ द्रौपदीक नाक, भृकुटि आ' ग्रीवा गर्वसँ चढ़लि छलैक।

पाण्डवसभ इन्द्रप्रस्थसँ दिनानुदिन अपन विस्तार होइत बढ़ैत राज्यपर शासन करए लगलाह। इन्द्रप्रस्थ धीरे-धीरे एकगोट राजधानीक अपेक्षित गति ध' लेलक। ओतक नागरिकसभ अपन-अपन वृति आ' काजमे लागि गेल। नहुँए-नहुँए नगरक नूतनता समाप्त होमए लगलैक। विस्थापित भ' गेल परिवारसभ सेहो एक-एक कऽ अपनाकेँ स्थापित करैत स्थायी नागरिकक रुपमे परिणत होइत गेल। ओहोसभ क्रमशः पूर्ण रुपेण नागरिकताक नव स्वरुपकेँ ग्रहण करए लागल छल। नारी बालिकासँ नम्हर होइत गेलि। डाँड़मे डराडोरि लऽ क' वस्त्रखण्ड बान्हए लागलि।

एम्हर हस्तिनापुरक दुर्योधनक दरबार आ' ... इन्द्रप्रस्थक युधिष्ठिरक दरबारमे भीतरे-भीतर नित्यप्रति प्रतिस्पर्धा बढ़िते चलि गेलैक। दुर्योधनकेँ पाण्डवक उन्नति असह्य होमए लगलन्हि। ओम्हर पाण्डव सेहो प्रतिरक्षाक तैयारीमे जुटि गेलाह। दुनूमे युद्धे तँ शुरु नहि भ' गेलैक मुदा सामरिक तैयारीसभ होमए लागल। हस्तिनापुर आ' इन्द्रप्रस्थक बीचमे एकप्रकारसँ शीतयुद्धक

वातावरण बनि गेलैक। ... देखाबएलेल उपरसँ दुनू औपचारिकतामे नीके सम्बन्ध रखने रहथि। दुनू परिवार सामाजिक एवम् धार्मिक अनुष्ठानसभ पारिवारिक रुपमे सम्मिलित भ' क' सम्पन्न करथि मुदा तरेतर दिनानुदिन बैर-भाव बढ़िते गेलन्हि। दुनू दिसक बूढ़-पुरानसभ एकरा शान्त करक अनेकन् प्रयत्न कएलथि मुदा सफल केओ नहि भ' सकलाह।

एक दिन दुर्योधन द्यूत अर्थात जुआ खेलक आयोजन कएलन्हि आ' युधिष्ठिरकेँ सेहो हँकार पठओलन्हि। तहिया द्यूत क्षात्र धर्मक अधीन मर्यादापूर्ण मनोरञ्जनक रुपमे मान्य छलैक। युधिष्ठिर पूरा दलबल सहित हस्तिनापुर अएलाह। दुर्योधन सेहो दुआरितक आबिकए पाण्डवसभकेँ स्वागत सत्कार क' क' ल' गेलखिन्ह।

कहैत छैक, दुर्योधनक मामा सकुनी कन्ना क' क' युधिष्ठिरकेँ हरेक दाओमे हरबिते चलि गेलन्हि। युधिष्ठिरोपर तँ आखिर जुआक निसे चढ़ल रहन्हि । ओहो किएक मानितथिन्ह ! एक-एक क' दाओमे सभ किछु रखैत गेलाह। पहिने अपन सम्पूर्ण मुद्रा रखलनि, फेर मणि-माणिक्यादिसभ, तखन फेर अपन यावत् चल सम्पत्ति। ... बादमे जुआक रङ्ग आओर चढ़ैत गेलन्हि। राजपाट रखैत गेलाह आ' ... जखन सभ किछु हारि गेलाह तँ अन्तमे सनकिकए अपन पत्नी द्रौपदीकेँ सेहो दाओमे राखि देलन्हि। कौरवसभ "पड़लौ !"... तुमुल शब्दसँ द्यूत-स्थल कम्पित करैत द्रौपदीकेँ जीति लेलक। ...आ' कहैत छैक ...जे तकरबाद ईख साधक हेतुएँ दुःशासन भरल सभाक मध्यमे द्रौपदीकेँ निर्वस्त्र कएलक। दुःशासन दुर्योधनक दुस्साहसी भाई छल !"

निर्जन निकुञ्जमे प्रवाहित निर्झरिणिक अजस्त्र ध्वनि जकाँ बिनु सुस्तएने मोदिआइनक स्वर लगातार बहिरहल छलैक आ' हमर थाकल आ' निन्नसँ औँघायल मन-मस्तिष्कक भितरिया तहमे ओकर मधुर आवाज नियोजित सुरमे बजरिरहल छल। ... कखनो-कखनो लगैत छल जेना हम सुतिरहल होइ आ' सपनामे चित्रसभ हमर निद्रित चेतनाक उपर एक पर एक चौपेटाइत कथाक धारावाहिक क्रममे धड़ाएल जाइत होए। ... नहि जानि कखनि (?) – हमरा ठीकसँ मोन नहि पड़ैअ' ... अपन सुरमे खिस्सा सुनबैति-सुनबैति मोदिआइन हमर अर्द्धचेतनामे इन्द्रप्रस्थक ओहि नारीक रुपमे परिणत भ' गेलि। सभ किछु एकदमसँ सपनाक चलचित्र जकाँ बुझाए लागल आ' लागए लागल जेना खाली मोदिआइनक कण्ठक मोहक ध्वनियेटा हमर कानमे बाहरसँ आबि ओहि चलचित्रसँ संयोजित ओइत जा' रहल होए। इहो भ' सकैछ जे हमर थाकल बाल शरीर औँघाकय सुतिरहल होइक आ' खिस्सा सुनक हमर उत्सुकताक जोरक कारणेँ कान खुलल अपन काज निरन्तरे रखने होए। नहि जानि कखनिसँ मोदिआइन ओहि खिस्साकेँ अपने जीवनक वृतान्त जकाँ सुनबए लागलि, – "हमर माय-बाप बतोने रहथि, – 'द्रौपदीक चीरहरण एकगोट नारीक अपमानेटा नहि अछि, ई

बड़का अपरिहार्य अनिष्टक सूचक अछि !' घर-घरमे एकर चर्चा भेल रहैक। सभ केओ अनिष्टक आशङ्कासँ त्रस्त भ' गेल छल। ... तकराबाद लगले पाण्डवसभकेँ बारह बर्षक हेतु वन जाए पड़लन्हि। इन्द्रप्रस्थ विरान भ' गेल। ओहिठामक बड़का-बड़का दरबारसभ खाली भ' गेलैक। लोकसभक रोजीरोटी फेरसँ छिना गेलैक। जन-मजूरी क' क' खाएबलासभ कामहि रहए लागल। ... ओतक नागरिकसभ एक-एक क' धीरे-धीरे हस्तिनापुर जाएलेल बाध्य भ' गेल। इन्द्रप्रस्थ एकदम शून्य आ' खाली-खाली भ' गेलैक।

हमर परिवार क्षत्रिय छल। बाबु इन्द्रप्रस्थक पाण्डव दरबारमे रक्षक दलक निचका श्रेणीक पदाधिकारी रहथि। हमरासभक खेती-पाती छिना गेल छल तैं बाबुकेँ बाध्यतावश निचको श्रेणीक नोकरी करए पड़ल रहन्हि जाहिसँ कहुनाकए नव रुपमे हमरासभ अपन जीवन यापन क' रहल छलहुँ। मिलाजुलाकए हमसभ फेरसँ निफिकिर जकाँ भ' गेल छलहुँ। मुदा, फेरो ओहो छिना गेल। पाण्डवसभक वन निर्वासनक बाद इन्द्रप्रस्थपर दुर्योधनक कब्जा भ' गेलन्हि आ' ओतक (इन्द्रप्रस्थ दरबारक) सभ रक्षकसभ सेवामुक्त भ' गेल। कहाँदोन पाण्डव-पक्षधरसभकेँ रखलासँ कौरवसभक सुरक्षाक स्थिति कमजोर भ' जइतन्हि तैं पाण्डवपक्षीय सभकेँ हटा देल गेल रहैक। एहिसँ हमरासभक परिवार फेरो प्रकोपित भ' गेल छल। हमरासभ सन दुखित परिवार बहुतो ... बुझू तँ असंख्ये रहैक। ओसभ पश्चिमक बड़का राजधानी हस्तिनापुरदिसि अपन जीवन जीविकाहेतु आगाँ बढ़ल। हमहुँसभ ओकरेसभक संग पंक्तिबद्ध भ' हस्तिनापुर पहुँचलहुँ।

हम तहिया आठ-नौ बर्षक रहलि छलि हएब। माय-बाबु, हम आ' हमर चारि बर्षक भाय शरणार्थीक रुपमे हस्तिनापुर अएलहुँ। मुदा ओहिठाम हमरा क्षत्रियसभक सम्मान अनुकूलक काज कतए भेटति ? पाण्डव पक्षीय हएबाक कारणेँ कौरवक सेनामे प्रवेश हमरासभक हेतु वर्जित रहैक। बाबु सेहो सभतरि सगर्व अपनाकेँ पाण्डवपक्षीय घोषित करथि। ... हमसभ काजक खोजीमे कतए-कतए ने बौअएलहुँ, की की नहि कएलहुँ ? कोनो उपाय नहि लागल। अन्तमे जमुनाक तटपर कौरवसभक दरबारक बहरिया दिवालोसँ बहुत बाहर जतए बकाइन आ' बबूरसभक छोट-छोट झाड़ी आ' नहि जानि कथिक-कथिक जङ्गल-झाड़ रहैक तथा दिवाल बनाबए बेरसँ फेकल-फाकल छोट-नम्हर विभिन्न रङ्गक पाथरसभ छिड़िआएल रहैक, हमसभ एकगोट मड़ैया बनाकए रहए लगलहुँ। हमरासभक वास नगरसँ बाहर आ' जङ्गलसँ सटल छल। बाबु भरि दिन नगरमे काज करथि आ' जे जतबे कमाथि तहीसँ हमरासभक गुजरि चलि जाइत छल।

अहिना बढ़ैत गेलहुँ, वयस चढ़ैत गेल। ... जुआन भेलहुँ तथा यौवनक प्रथम सोपानपर अपनाकेँ ठाढ़ पएलहुँ। माय कहए लागलि, – "नारी, तोँ बड्ड सुन्नरि छे। तोहर देह आ' गढ़नि बड्ड

सहेजलि आ' समटलि छौक। ... रानी बनए योग्य छे तों!" ... हम गर्वसँ फुलि जाइत रही। एकान्तमे जा क' जङ्गली हरियरीसँ अपनाकेँ श्रृ"ङ्गारैति रही आ' बहुतो-बहुतो कालधरि अपन रुपकेँ एकसरे निहारैति रही। हम कनेक नाम रही, कस्सल देह ... पोर-पोर नीचासँ उपरधरि मिलल हमर शरीरक बनोट रहैक। तहिया कोनो काज धन्धा तँ छल नहि, तैं हम जङ्गलमे बरोबरि एम्हर-ओम्हर बौआइति फुदकैति रही। ओहिना ... हरिणीक चालिमे... ! मृगयाहेतु हस्तिनापुरसँ राजकुमारसभ ओहि जङ्गलमे बरोबरि आबथि जाथि। तखन हमर माय हड़बड़ाकए हमरा मड़ैयामे ठेलि देअए आ' कहए, – "तोरा ... ! देखि लेतौक तँ उठाकए ल' जएतौक दरबारमे ... आ' नर्तकी बना देतौक ! कहियो नहि बिसरिहेँ जो तोँ क्षत्रिय कुमारी छेँ ... !"

अपन मड़ैयाक भूरदने हम शिकार खेलए आएल राजकुमारसभकेँ देखैति छलहुँ आ' हुनकेसभक संग आएल ओहने तेजस्वी घोडापर चढ़ल शिकारी सैनिकसभकेँ सहो निहारैति रहैति छलहुँ । हमरा ओ पुरुषसभ बड्ड नीक आ' आकर्षक लगैत छल।

एक दिन हम जङ्गलमे एम्हर-ओम्हर ओहिना घुमैति-बौआति चलि जाइति रही। चैत महीना रहैक। जङ्गलक वातावरण हिलैत-डोलैत फूल आ' लतिकासभक सुगन्धसँ गमगमा रहल छलैक। चिरई चुनमुनसभ गाछसभपर फुदकैत चिरबिर कएरहल छल। कखनो-कखनो कोईलीक तीख स्वर जङ्गलकेँ झुमा' दैत छलैक। ओहि दिन हमहुँ अपनाकेँ रङ्गविरङ्गी फूलसभसँ श्रृंङ्गारने रही। तखने अपन दलसँ बिछुड़ल एकगोट अश्वारोही हमरासँ सटले कनेके दूर ठाढ़ नजरि पड़ल। तखन सूर्यक रश्मि ओकर मुहपर सोझे पड़ैत रहैक आ' घामक कारणेँ भीजल ओकर रक्तिम अनुहार चमकैत रहैक। हमरा बुझाएल जेना कतौक कोनो विशिष्ट ज्योति चमकिरहल होइक। ओकर गर्दनिपर लटकल कारी-कारी केशसभ घोड़ाक चालिक संगहिं उपर-नीचा होइत छलैक। ... तखन हम ओहि विराट जङ्गलमे एकसरि छलहुँ सेहो एकगोट सैनिक वेशधारी अत्यन्त सुन्दर युवककेर ठीक आगाँ। हमरा बड्ड लाज लागिरहल छल। हम चट् एकगोट मौलश्री फूलक झाड़क ओटमे अपनाकेँ नुकाबक प्रयत्न कयलहुँ। आ' कातेसँ हुलकी दए ओकर सुन्दरताकेँ निहारैति रहलहुँ। ओहो हमरा देखि नेने छल। अत्यन्त सहजतासँ ओ अपन घोडाकेँ लगेमे सटले ठाढ़ क' नीचा उतरल तथा डेग बढ़बैत हमरादिसि बढ़ल। ... हमरासभ एक दोसरकेँ टकटकी लगाकए देखिरहल छलहुँ । ओ अत्यन्त भद्रतासँ बाजल, – "हे सुन्दरी, अहाँ के छी ? अप्सरा, किन्नरी वा गन्धर्व ? मनुख तँ अहाँ निश्चय नहि छी। पृथ्वीपर एहन सुन्दरता सम्भवे नहि अछि ! ... किन्नहु नहि !!" हमरा बुझाएल जेना हमर कानमे केओ अमृत चुआ देने होए। हम अपनाकेँ सम्हारैति कहलिऐक, – "हम एकगोट मानव नारी छी। ... क्षत्रिय कुमारी !"

तकराबाद हम ओकरा देखए नहि सकलिऐक। मुड़ी खसाकए नीचा तकैत पएरक औंठासँ माटि कोरिते रहि गेलिऐक !... अही ठामसँ हमरासभक प्रेम शुरु भ' गेल छल, अकस्मात् आ' प्रथमे दृष्टिसँ !

जेना पहिने होइक, हमरासभक स्वयंवर तखने जङ्गलेमे भ' गेल। तकर तुरतबाद तत्क्षणे हम हुनका अपन मायसँ भैंट कराबए हेतु हमरासभक मड़ैयामे ल' गेलिअन्हि। हमरा मायकैँ ओ कहलखिन्ह, – "माता, हम कौरव पक्षीय सैनिक छी। आई अहाँक सुन्नरि बेटीक पति होमक सौभाग्य पाबि अपनाकैँ अत्यन्त हर्षित अनुभव कएरहल छी ...।"

साँझखन बाबुओ अएलखिन्ह तँ हमर वरकैँ देखि ओहो बहुत प्रसन्न भेलखिन्ह आ' कहलखिन्ह, – "हमरासभ पाण्डव पक्षीय छी तथापि एकर कोनो अर्थ आ' चर्च आवश्यक नहि !... हमरासभक बेटी एकगोट योग्य क्षत्रिय कुमारकैँ अपन वर चुनलकि अछि, यएह हमरासभक हेतु अत्यन्त प्रसन्नता आ' सन्तोषक विषय थिक।"

हमर पति हमरा ओही राति अपनासंगैँ घोड़ापर बैसाकए अपन घर ल' गेलाह। माय सिसकैत, बाबु आर्शीवाद द' क' आ' हमर छोट भाय 'जल्दीये भैंट करए आयब।' कहि आश्वस्त करैत हमरासभकैँ बिदा कएलन्हि। एकटा पुरुषकेर सुसुम स्पर्शसँ रोमाञ्चित होइत, हृदयमे माय-बाबु आ' भायक स्नेहकैँ सहेजैति हम अपन पतिक संग पत्नीक रुपमे सासुर बिदा भेलहुँ। ... हमरासभक गाम हस्तिनापुरसँ कनेक उत्तर-पश्चिम दिशामे छल। हमरासभ मध्य रातिमे घर पहुँचल हएब। हमर पति पहिने नीचा कुदिकए हमरा सहारा दैत घोड़ापरसँ उतारलन्हि। अन्हारमे ओ अपन मायकैँ घरक केबार खोलए हेतु सोर करैत कहलखिन्ह, – "माय, देख तँ आइ हम केहन सनेस अनलहुँ अछि ! ... कनेक जल्दी केबार खोल तँ ...!!" आ' ओ हमरादिसि तकलन्हि। हम सिनेहसँ गुदगुदाइत हुनकासँ आओर सटि गेलहुँ।

हमर सासु केबार खोललखिन्ह आ' हमरासभकैँ देखि हाथक डिबिया कनेक उपर उठओलखिन्ह – नीक जकाँ देखए वास्ते। अत्यन्त लगसँ एक क्षण ओ गौरसँ हमरा देखललिन्ह। तत्क्षण स्नेहक लहरि जेना हुनकर सम्पूर्ण शरीरपर पसरि गेल होइन्ह ओ हुलसि क' बजलीह, – "कनियाँ, आउ ! आउ, आउ !! ... अपन घरमे आउ !"

तत्पश्चात् ओ अपन बेटाकैँ कहलखिन्ह, – "साक्षात लक्ष्मीकैँ तोँ घरमे अनलह अछि ! हमर लक्ष्मी स्वरुपा पुतहुक सदैव पूरा सम्मान हएबाक चाही !"

हमरासभक परिवार छोटे छल, जमाजमी चारि गोटेक। सासु, देओर आ' हमसभ दूगोटे ! मुदा पारस्परिक समन्वय, सिनेह आ' पति-पत्नी बीच हमरासभक प्रणय घरकँ स्वर्ग बना देने छलैक। स्वर्गोमे एहिसँ वेशी आनन्द पाएब निश्चिते सम्भव नहि हएत !

गाम जङ्गलसँ सटले रहैक - क्षत्रियसभक एकगोट छोटका गाम ! सभ परिवारक मुख्य आ' खास पेशा छलैक तँ खेतीये तथापि जाहि घरमे समाङ्गक संख्या वेशी रहैक ओहिमेसँ केओ-केओ सैनिक सेवामे नोकरीहेतु हस्तिनापुर चलि जाइत छल। हमरासभकँ कम्मे खेत-पथार रहए तैं हमर वरकँ सैनिक सेवामे नोकरी करए जाय पड़ल रहन्हि। अपन योग्यतासँ ओ सेनामे नीक पदोन्नति करैत आगाँ बढ़ैत जाइत छलाह। भरि दिन हस्तिनापुरमे रहैत छलाह आ' साँझ पड़ितहिं घोड़ा दौड़बैत घर घुरि अबैत छलाह। एहिपर हमरादिस ताकि-ताकि क' हमर सासु ठट्ठो करथिन्ह, – "आइकाल्हि हमर जेठकामे घरक बेश मोह उमड़ि अएलैक अछि !"

तहियाक हमर दिनसभ बड्ड नीक आ' रमनगर छल। ओतक सभ समतुरिया बेटी-पुतहुसभ हमर मितिन बनि गेलि छलि। हमसभ झुण्ड बना-बना क' खेतमे घुमैति रही। जङ्गलमे गायमाल चरबैति रही आ' घासपात तथा जारनि-काठी बटोरिकए अनैति रही। ... हमरासभक गामेक कातमे एकटा कुण्ड रहैक। ओहि कुण्डक भीड़पर एकगोट विशाल सूर्यमन्दिर रहैक। आ' तैं ओहि कुण्डकँ लोक सूर्यकुण्ड कहैक। पावनि-तिहारमे ओतए मेला लगैक। खास क' सूर्यग्रहणमे खूब नमहर मेला लागि जाइक। बड्ड भीड़ आ' ठेलमठेल भ' जाइक। ... आन दिन ओहिठामक वातावरण शान्त आ' स्थिर रहैत छलैक। हमसभ गामक मौगीमेहरसभ संग मिलाकए ओतहि जाई आ' मोहारपर बैसिकए बहुतो कालधरि बतिआई, हँस्सी-ठट्ठा करी, खेली-कूदी। ... हमरासभ अहिना अपन समय व्यतीत करैत रही। कहियो-कहियो सभक मोन भ' जाइक तँ वस्त्र निकालि नहाए लागी ! संगीसभ हमर देह देखिते कहए लगैकि, – "नारी, बड्ड सुन्नरि छे तों ! तोरा देखिकए हमरासभकँ इर्ष्या होइत अछि। गृहस्थ स्त्रीकँ एतेक सुन्नरि नहि हएबाक चाही !"

हमरा लागए लागल जेना जीवन कहियो नहि सठएबला बसन्त थिक !... तहिया सम्पूर्ण देशक वातावरण शान्त आ' सुखमय रहैक। दुर्योधनक प्रताप चारुभर व्याप्त भ' गेल छलन्हि। हुनकर सभ शत्रु पराजित भ' गेल छल। पाण्डवक सन्दर्भ सेहो लोक बिसरि गेल रहए। पतिप्रतिक हमर प्रेम आओर बढ़िते जा' रहल छल। प्रत्येक दिन साँझ क' हम दुआरिपर ठाढ़ भ' हुनकर बाट देखी। आह ! तहियाक रमणीय रातिसभ.... हम कहिओ कोना बिसरि सकैति छी !... प्रेम आ' आलिङ्गनसँ भरल ... आनन्दक क्षणसँ कसल रातिसभकँ के बिसरि सकैत अछि ? कहिओ-कहिओ

हमर पति दरबारक चर्च करथि आ’ कहथि, – “पाण्डवसभक वनवासक बारह बर्ष बिति गेलन्हि। गुप्तवास सेहो आब जल्दीये समाप्त भ’ जाएत।”

हम कहिअन्हि, – “आब पाण्डवसभ फेरो अओताह ? ओसभ एतय शान्ति समाप्त क’ कलह मचाबए थोरहिं घुरताह ?”

तथापि कहियो काल क’ हमरो मोन दुश्चिन्तासँ भरि जाए। ... कहुँ कतहुसँ हमर सुखी आ’ आनन्दसँ भरल एहि जीवनकेँ किछु खलबला तँ नहि देत ? कोनो दुर्दिन तँ नहि आबि जाएत ? मुदा मोन फेर स्थिर सेहो भ’ जाए। कतहुँ किछु तेहन अशुभ नहि देखाए। सुख छिनएबला कारी मेघक कोनो छाँहो नजरिपर नहि उतरए।

अहिना अत्यन्त आनन्द आ’ परमसुख भोगैत दिन बितारहलि छलहुँ। हमरेटा नहि सभ नारीसभ अपन-अपन पति प्रेममे बिभोरि छलि। शान्तिक वातावरण छलैक। युद्धक आशङ्का एकलेखे बिला गेल रहैक। सूर्यकुण्डमे एक दिन सखीसभ हँसैति-खेलैति खुशीयो मनोलहुँ, – “आब मनुख युद्धसँ मुक्ति पाबि लेलक... !”

मुदा आनन्दक क्षण जेना साँचे केओ छिनि नेने होए ! ... एकदिन हमर पति बहुत राति क’ घुरलाह। अनुहार एकदम थाकल ठेहिआएल आ’ करिआएल रहन्हि। हमर मोन आशङ्कासँ भरि गेल, – “की, कोनो तेहन खबरि अछि?”

“पाण्डवसभ विराट राजाक दरबारमे छथि। एक बर्षक वनवासक समाप्तिपर ओसभ राजा दुर्योधनकेँ अपन राज फिर्ता करएलेल समाद पठोलन्हि अछि।” – ओ स्थिरसँ निश्वास छोड़ैत उत्तर देलन्हि।

हम व्यग्रतासँ पुछलियन्हि, – “आब की हएत ?”

ओ आओर गम्भीर होइत बतओलन्हि, – “राजा दुर्योधन विराट राजाक दूतकेँ नहि नीक जकाँ तिरस्कार क’ घुरा देलखिन्ह !”



एकराबाद हमरासभक दुःखक दिन शुरु भ' गेल। चारुकातसँ दुश्चिन्ता घेर लेलक। रातुक प्रणयमे सेहो आब खिन्नताक बोध होमए लागल, दिवसक घड़ी तँ ओहिना उदासीनतासँ भरल कोंचल रहिते छल। एहन अवस्था हमरेटा नहि छल। सभ नारीसभक यएह हाल रहैक। सूर्यकुण्डपर जमा भ' क' हमरासभ अपन-अपन पतिद्वारा प्राप्त समाचारसभक जोड़-तोड़ तथा गन्थन-मन्थन करैत रही आ' चिन्ता-दुश्चिन्तामे समय बितबैति रही। ककरो समय अनुकूल नहि बुझाइक। उत्पन्न परिस्थितिकैँ केओ दुर्दिनक लक्षण कहए तँ केओ अकछिकए बाजि उठए, – "देखही, ओहि दक्षिणबरिया कातसँ उठैत बसातकैँ ... केहन गरम आ' उसनियाँक भाप जकाँ बुझाइत छैक !"

सूर्यकुण्डक दक्षिण-पश्चिम दिशामे छोट-छोट विभिन्न आकारक पाथरसभसँ पाटल विशाल बाँझ परती खाली क्षेत्र रहैक जाहिमे काँटक झाड़, घासक झङ्खोर तथा कुश छाड़ि आर किछु नहि होइक। ओहि परतीक बाँझ चरित्र हमरासभकैँ नहि जानि किएक शुरुएसँ बड्ड डराओन लागए। ... गर्मीमे तँ ओतक टटाएल धरती ताओसँ धीप जाइक। दूरसँ ओहिमेसँ निकलैत भाफ देखिक' लगैक जेना ओकर माटिक तरमे कोनो अग्निकुण्ड हरहराइत प्रज्वलित रहल होइक। उपर वायुमे धधरा जकाँ गरम बसात स्पष्ट देखए मे अबैक। आ' फेर बरखामे ततेक ने पानि पड़ैक जे बुझाइक आकाश फाटिक' खसि पड़तैक। इन्द्रक बज्र क्षण-क्षणमे भयङ्कर गर्जन करैत ओहि धरतीपर बेरि-बेरि बजरैक। बसन्तक कोमल ऋतुमे सेहो ओहिठामक वायुमे रमणीयता नहि अनसोहाओन सरसराहटि आ' उदास मनक उच्छ्वास रहैत छल। ... ओ विशाल बाँझ भूमिखण्ड हमरासभकैँ कहिओ नीक नहि लागल। सदिखन भूतहा जकाँ बुझाए। हमरासभ अपनामे बतिआई – "ओ स्थान अपसगुनी अछि, पापी अछि आ' तैं तँ ओतक माटि बाँझ थिकैक। ... ओतए केओ अपन घर नहि बनओलक ने तँ केओ ओतए हरे जोतलक। फलोफूलक बगानहेतु ककरो उपयुक्त नहि बुझएलैक, ई बाँझ क्षेत्र ककरो पसिन्न नहि भेलैक। तैं केओ ओकरा नहि अपनओलक ! अपन नहि बनओलक ! ओ रजेक जमीन रहि गेलैक सभदिन, कुरु राजासभक सरकारी जमीन। आ' तैं ओहि भूमिकैँ लोक कुरुक्षेत्र कहैक।"

धीपल झड़काओन घूर्ण वायुपर खौंझाइत हमर एकगोट मितिन एक दिन बाजलि रहए, – "देखही तँ, केहन राक्षसी बसात अछि। खाँ-खाँ करैत बहैत अछि ...!"

कहियो काल हमसभ एक-दोसरकैँ ढ़ाढ़स दिऐकि, – "कौरव तथा पाण्डवक बीच मेलमिलापक पूरा प्रयत्न भ' रहल छैक। दुर्योधनकैँ हुनकर अपनो पक्षक बूढ़-पुरानसभ बुझएबाक

यत्नमे लागल छथि। सभ केओ भीरल छथिन्ह। ... ओम्हर युधिष्ठिर सेहो पाँचेटा गामसँ सन्तोष करक उदारता व्यक्त क' रहल छथिन्ह।"

कहियो सुनिऐक, – "धर्मात्मा युधिष्ठिरमे लड़िकए राज्य प्राप्तिक कनेको आकांक्षा नहि छन्हि। हमरासभ हुनका 'धन्य पुरुष !' कहिअन्हि, मुदा तखने केओ कहए आबए जे भीम तामसे ताल ठोकि-ठोकि क' उत्तेजनामे कौरवपक्षकेँ ललकारैत रहैत छथिन्ह। ... कहाँदोन द्रौपदी सेहो सभकेँ स्थिर होइत देखि धिक्कारैति कहलखिन्ह, – "हे तथाकथित हमर वीर पतिसभ ! की अहाँसभ भरल राजसभामे कएल गेल हमर बेइजति बिसरि गेलहुँ ... ?"

द्रौपदीक एहन ईख वचन हमरासभकेँ नारीक मर्यादाक अनुरुप नहि लागए। हमसभ अपनामे कहिऐक, – "तेरह बरख पहिनेक असम्मानक प्रतिशोध राखि एकगोट नारीकेँ अपन पुरुषकेँ युद्धहेतु उत्तेजित नहि करक चाही। ई तँ अपन सुलभ नारीत्वकेँ तिलाञ्जलि देब अछि।"

अही बीचमे हल्ला उठलैक जे द्वारिकासँ कृष्ण मध्यस्थताक हेतु आएल छथि। हमरासभक साँस घुरल। जाहि वृष्णि वंशक राज्य समुद्रधरि फैलल छल ततक नेता ओहि प्रतापी वीर पुरुषक नाम के नहि सुनने छल हएत ? मथुरा आ' गोकुलमे यदुवंश शिरोमणिद्वारा भेल लीलासभक खिस्सा तहिया स्त्रीगणसभमे बेश चर्चाक विषय रहैक। सभक हृदयमे हुनकालेल उत्सुकता रहन्हि। ... यद्यपि ओ पाण्डवसभक कुटुम्ब रहथिन्ह, हुनकेसभक पक्ष सेहो लेथिन्ह तथापि हमरासभकेँ हुनकापर पूरा विश्वास आ' श्रद्धा रहए। हुनकर मध्यस्थता असफल हएबे नहि करत, अवश्ये सफल हएत से सभक विश्वास रहैक। ... बहुतो हुनका देवताक अवतार मानि पूजा करन्हि। 'ओ की ने क' सकै' छथि ?' – अपनाकेँ आश्वस्त करएहेतु हम मितिनसभ एक-दोसरिकेँ पूछिऐकि आ' अपने उत्तरो दिऐकि। हम तँ विश्वस्त भ' गेलहुँ, आब हमरासभक सुखमय जीवनक आकाशमे छाएल कारी मेघ निश्चिते बिला जाएत। हम फेरसँ पहिनहिं जकाँ उत्सुकतापूर्वक साँझखन क' दुआरिपर अपन पतिक प्रतीक्षा करए लगलहुँ।

हमर देओर पाथरपर अपन हथियार चमक'बैत कहथिन्ह, – "भौजी, नहि जानि कतेक पाण्डवसभक माथक रक्त ई पिअत ?" हमरा कनेको नीक नहि लागए। पिताकए कहिऐकि, – "केहन अशुभ वचन निकालैत छी अहाँ, बौआ ! आ' सेहो साँझुक पहर ...। अहाँकेँ शान्ति आ' मेलमिलाप नीक नहि लगैत अछि ? छिः !"

रातिमे अपन पतिक कारी केशसँ छारल गरम छातीकेँ स्नेहसँ स्पर्श करैति, मलैति आ' आओर कसियाकए हुनकासँ सटैति आश्वस्त भावेँ हम कहलिअन्हि, – "प्राणनाथ, श्रीकृष्णक प्रयत्नसँ अवश्य मेल भ' जाएत। आब हमरासभ अहिना प्रणयक राति निर्बाध रुपसँ मना सकब !"

हुनकर उत्तर ततेक आश्वस्तकारी नहि छल। ओ कहलन्हि, – “कोना कहू जे की हएत प्राणप्यारी ! अपनासभक राजा दुर्योधन पाण्डवसभकेँ सुइयोक नोंक जतेक माटि नहि देब से कहिरहल छथिन्ह। जीद्दपर अड़ल छथि। ... एम्हर श्रीकृष्ण आएल तँ छथि मेलमिलापक प्रस्ताव ल’ क’ मुदा छथि पाण्डवसभक पक्षमे ... आ’ हुनकासभकेँ युद्धहेतु भीतरे-भीतर उकसा सेहो रहल छथि। “

हमरासभक प्रणय-रात्रि फेरो सेरा गेल आ’ सदैव जकाँ भोरे प्राणनाथ घोड़ापर सवार भ’ हस्तिनापुर चलि गेलाह।

दुपहरियामे फेर हम सभ मितिन सूर्यकुण्डक पाथरक घाटपर जमा भेलहुँ। सभक कथन एकहि रङ्गक छलैकि – श्रीकृष्ण छल क’ रहल छथि ! शुद्ध मनसँ मध्यस्थता नहि क’ रहल छथि। केओ-केओ तँ इहो बाजलि जे कृष्ण भगवानक अवतार छथि आ’ पृथ्वीक भार हरन करएहेतु समर रचाबएलेल मृत्युलोकपर आएल छथि।

समर शब्देसँ हमरासभक हृदय भयसँ भीतरसँ काँपि गेल। डरसँ थरथराइत नारीसभ अपन-अपन पति, भाय, पिता आ’ बन्धु-बान्धवसभक हेतु ईश्वरसँ मोनहिं मोन प्रार्थना करएलागलि, – “हे भगवान ! सभक रक्षा करु।” हम यौवनक प्रथम प्रहरमे प्रवेशहिं कएने नारी बाणसँ आहति हरिणी जकाँ छटपटा गेलहुँ आ’ काँपिकए बाजि उठलहुँ, – “हे प्रभु! हमर माँगक सिन्दूर ... हे परमात्मा, कहियो ने पोछह !”

मुदा कोनो भगवान भारतबर्षक कोन-कोनसँ उठल सम्पूर्ण नारी कण्ठक एहि आर्त पुकारपर किचिंत ध्यान नहि देलखिन्ह। दिन-प्रतिदिन दुनू पक्षसँ लडाईक तैयारी जोड़तोड़सँ होमए लागल। दूत आ’ तेज घोड़ा द’ द’ क’ अपन पक्षमे मिलाबएहेतु भारतबर्षेटा नहि दूर बहुत दूर देशदेशाबरक राजासभलग दूतसभ पठाओल गेल। राजासभ मोटामोटी रक्तसम्बन्ध अनुसार कौरव आ’ पाण्डव पक्षमे विभाजित भ’ ठाढ़ होइत गेलाह। कृष्ण कहाँदोन अर्जुन आ’ दुर्योधन दुनूकेँ पुछलखिन्ह, – ‘एकदिसि एक अक्षौहिणी सेना रहत तँ दोसरदिसि हम एकसरे रहब, कोन लेब ?’ दुर्योधन अक्षौहिणी सेना चुनलथि। अर्जुन, – ‘यतो कृष्णस्ततो जयः’ कहैत कृष्णेकेँ चुनलन्हि। दुनू पक्ष एक दोसरकेँ तोड़क, फुटाबक सम्पूर्ण यत्न कएलक। एक दिन कुन्तीयो नुकाकए अपन जारज पुत्र कर्णलग जा’ क’ कहलखिन्ह, – “पुत्र, अहाँ पाण्डवदिसि लागि जाउ !” सुनैत छिऐक कहाँदोन कर्ण कहलखिन्ह, – “कि तँ अर्जुन रहत कि हम रहब, अहाँक पाँचटा पुत्र तँ रहबे करत ने !”

दुहू पक्षक सेना सुसंगठित सुसज्जित होइत एकत्रित होमए लागल। दुहू पक्षक ओहन विराट् सेनाकेँ एकत्रित भ’ अँटए जोगर दोसर कोनो स्थान आओर कतए भेटितैक ? ओहन स्थान

तँ एकमात्र हमरासभक गामक सूर्यकुण्डक दछिन-पछिमबरिया विशाल परती कुरुक्षेत्रेटा रहैक। तैं दुनू पक्षक सेना ओतहि जमा भेलैक। पुरुषसभ युद्धक उत्तेजनासँ धिपैत खराइत गेल। ओसभ एम्हर-ओम्हर दौड़ए, लाबए-ओसारए, धरए-नुकाबए नहि जानि किएक आ' कथीमे व्यस्त रहए। ओकरासभसँ नारीसभक भेँटघाँट सेहो दिन-दिन कठीन होइत गेलैक। एम्हर भयग्रस्त स्त्रीगणसभकेँ कतहु कोनो त्राणक बाट नहि देखाइक। सभ छटपटाइक, बेचैन रहैक। कखनो-कखनो भयसँ हमर दम फुलि जाए। असंख्य सेना, रथसभक पहिया, हाथीक पएर आ' घोड़ाक टापसँ उड़ल गर्दक कारणेँ आकाश झँपा क' अन्हार भ' जाइक। हमरासभक खेतक सम्पूर्ण बाली निर्दयतापूर्वक पिचरा-पिचरा क' देल गेल। सभ किछु माटिमे सना गेलैक। ओम्हर खाली बीच-बीचमे तुमुल घोष, शंखक ध्वनि आ' नगाराक गड़गड़ाहटि होइक। आ' एम्हर अपन छोट नेना भुटकाकेँ छातीसँ लगाकए त्राहि-त्राहि करैति मातासभक क्रन्दन सुनाइक।

तैयो, ... मृत्युक एहन विशाल आयोजना चारुभर व्याप्त होइतो ... सभतरि कालक खड्ग स्पष्ट उठाओल देखाइतो जाधरि साँस ताधरि आसक कारणेँ छोट-छोट हल्लामे हमरासभकेँ आशाक किरण झलकैत रहल। अपन राजा दुर्योधनक दिससँ तँ हमरासभकेँ कोनो आसे नहि छल किएक तँ ओ हठी तथा अभिमानी रहथिन्ह। अपन हठक लेल सम्पूर्ण संसारकेँ अग्निमे सुड्डाह क' सकैत छलथि। मुदा पाण्डवसभक स्वभाव एवं व्यवहारसँ बीच-बीचमे आशाक अवश्य सञ्चार भ' जाइत छल। सुनलिऐकि जे जखन कृष्ण धर्मयुद्धक व्याख्या कएलखिन्ह तँ कहाँदोन युधिष्ठिर बाजल रहथिन्ह, – "हे केशव ! युद्ध कखनो धर्ममय नहि भ' सकैछ !" एकबेर तँ उग्र स्वभावक होइतो भीम सेहो कृष्णसँ शान्तिक पक्षमे तर्कसहित अपन विचार रखलन्हि।

अन्ततः किछु नहि भ' सकल। हमरासभक आस पोआरक धधरा जकाँ धधकल आ' मिझा गेल। ओहि राति जखन हमर पति घर घुरलाह तँ हुनकर मुहे देखि हमरा झलकि गेल जे आजुक राति प्रायः हमरासभक अन्तिम राति हएत। ... ओहि राति हमरा बकारे नहि फुटल। ओहो किछु नहि बजलाह। भरि राति छातीमे छाती सटओने नोर बहबैति रहलहुँ। ... भोरे जाइत काल ओ एतबय कहलथि, – "विदा ! प्यारी विदा !!"

हम अपन मुरी उठाकए डबडबाएल आँखिसँ कहुना देखिलिऐकि किछु बाजलि नहि गेल। ... विदा ! विदा !! की विदा ? आईतक हम कहाँ विदाई करए सकलि छी ? कएटा युग, कतेक कल्प बिति गेल मुदा ओहि भोरसँ बिछुड़ल अपन पतिकेँ हम एखनतक विदाई नहि क' सकलि छी।

परात भनेसँ गाममे एकोटा पुरुष रहिए नहि गेलैक। हमर बाबु आ' भाय सेहो ओम्हर पाण्डवदिससँ सेनामे भर्ती भ' गेल छलाह से सुनलहुँ। पति आ' देओर कौरव सेनामे तथा बाबू आ'

भाय पाण्डव सेनामे। के ककर बध करत ? एहि स्वजातिय हत्याकाण्डसँ के ककरापर विजय प्राप्त करत ? ... ककरासँ के हारत ? हे परमात्मा !

दिन तँ ओ प्रलयकेर प्रारम्भक छल, मुदा ओहू दिन भगवान भास्कर सामान्ये दिन जकाँ अपन ज्योतिर्मय वरदान पृथ्वीपर सर्वत्र छिड़िअबैत उदित भेल छलाह। सूर्योदयसँ पहिनहिंसँ तँ ओतए घोर कोलाहल छलेहे मुदा सूर्यक प्रथम किरण कुरुक्षेत्रपर पड़िते ओ विशाल परती धप्प द' बरि गेलैक। रथसभक शिखरक छोड़सभ, योद्धासभक कवच, हाथ-हतियार, तरुवारि, तरकश, बाण, बरछी, भाला, गड़ाँस, सेनापतिक मुकुट, घोड़ा आ' हाथीक साज-श्रृंङ्गार सभ किछु एकेबेर जेना विस्फोटित भ' गेल होइक। सूर्यक किरणसँ सभ किछु दमकि उठलैक। ओहि दिन ओहि ठाम मनुखक उमड़ल बाढ़िक कोना वर्णन करु ? जे देखलक सएह बुझलक। ओकर चित्रण केओ नहि पतियाएत, कल्पनासँ फाजिलक तथ्य अछि ई !

प्राणनाथसँ बिछुड़िते हमर जीवनक सम्पूर्ण रस सुखा गेल, सभकिछु निघटि गेल। दशो दिशामे अन्हारे अन्हार देखाए लागल ! कतहु किछु नहि बुझाए ... कखनो एम्हर आबी तँ कखनो ओम्हर जाई। तहिया सान्त्वनो सेहो के ककरा आ' के दितैकि ? सभक हाल एकहि रङ्ग ! सभ समान रुपेँ पीड़िता छलि, अपन-अपन परमप्रिय पुरुषसभकेँ रणमे विदा क' नोर चुआरहलि छलि। सभक ह्दयमे एकान्तक पीड़ा आ' क्रन्दनेटा रहैक। सासुलग जाई तँ ओ हमरा टुकुर-टुकुर भकुआकए देखथि। हुनकर आँखिक आगाँ दुहू पुत्रक चित्र नचैत रहैत छलन्हि होइत। गामक सखी मितिनसभ सेहो हमरेसन वेदनामे वेदाअलि छटपटाइति बौआइति रहैति छलि। सभ अपन-अपन प्राणोसँ प्रिय पतिकेँ मृत्युक द्वारिदिसि विदा भ' जाइत देखने छलि। ... ओहिठाम के ककरा की कहिकए भरोस दितैक ?!

हम विक्षिप्त भ' क' गामक सभसँ उँच उतरबरिया उँचका धत्तापर जा क' बैसि गेलहुँ जतएसँ भोरक साफ इजोतमे कुरुक्षेत्र किछु-किछु देखाइत रहैक। हमरेसनक बहुतो आओरो ग्रामीण नारीसभ अपन-अपन सन्तानसभकेँ छातीमे सटोने थाकल शरीरकेँ ठाढ़ राखएमे असमर्थ भए ठेहुनियाँ रोपिकए बैसलि उचकि-उचकि क' देखक प्रयास कए रहलि छलि। सभक दृष्टिमे शून्यता छलैक आ' सभ कुरुक्षेत्रमे लहराइत मानवसमुद्रमे अपन-अपन प्रियसभकेँ ताकिरहलि छलि। ओहि समुद्रमे के कोनो मानव विन्दुविशेषकेँ ठेकानि क' चिन्हि सकैति छलि ? आब तँ ओहिठाम खाली एकटा प्रचण्ड मानव पिण्ड देखाइत छलैक जाहिमे व्यक्ति पूरापूरी लुप्त भ' गेल छल। ओतए आब ने ककरो प्राणप्रिय पति, ने ककरो छातीक टुकड़ा पुत्र, ने ककरो भाय अथवा ने जीवनक एकमात्र आधार बाप, दादा वा आओर केओ देखाइत छलैक। राक्षसी मृत्यु सभकेँ मरएसँ पहिनहिं एकाकार क' देने छलैक।

हम नारीसभ ओहि उँचका धत्तापर ठाढ़ भ’ अपन ह्दयमे क्षुद्र प्रेम समेटने अपन प्राणधारसभकेँ खोजक व्यर्थ प्रयत्न क’ रहलि छलहुँ। दोसर-दोसर देशसभमे सेहो हमरेसभ सन अनेकन् नारीसभ रणक्षेत्रकेँ देखए सँ असमर्थ होइतो एहि दिशामे शून्य दृष्टियेँ ताकिरहलि छलि होइति – अपन-अपन लोककेँ खोजक प्रयास करैति !

पाण्डव पक्षीय सेनासभ पछवारी कात पंक्तिबद्ध ठाढ़ छल। बुझाइत छलैक जेना रातिये भरिमे विशाल मानव जङ्गल जनमिकए कतहुसँ आबि गेल होइक। पूबसँ उगैत सूर्यक किरण सोझे पाण्डव पक्षीय सेनापर पड़ैत छलैक। सात अक्षौहिणी सेना ल’ क’ महारथी द्रुपद, विराट, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, सात्यकि, चेकितान भीमसेनक पाछाँ युद्धकौशलक विभिन्न रुप तथा रणनीतिक आकार-प्रकारमे सङ्गठित भ’ क’ ठाढ़ छल। बीच-बीचमे ओतए भीषण हलचल भ’ जाइत छलैक। सभ उत्तेजित भ’ जाइत छल। चहुँदिसि शंख आ’ दुन्दुभिक तुमुल ध्वनि पसरि जाइत छलैक। लागए लगैत छल जेना रथ, पैदल, आ’ हाथीसँ भरल भयङ्कर सेना उताहुल तरङ्गसँ व्याप्त महासागरक समान क्षुब्ध भ’ गेल होए।

रणहेतु व्याकुल पाण्डव आ’ पाण्डवक विराट सेना तीब्रतासँ एम्हर-ओम्हर क’ रहल छल। केओ रथपर, केओ हाथीपर तँ केओ घोड़ापर आरुढ़ भ’ रहल छल। कतेककेँ हमरासभ कवच बन्हैत देखलिऐकि। सेनाक आगाँ-आगाँ नेतृत्व क’ रहल छलाह भीमसेन, कवचधारी माद्रीकुमार नकुल तथा सहदेव सुभद्राकुमार, धृष्टद्युम्न तथा पाञ्चाल देशीय क्षत्रीयसभ। सभसँ आगाँ भीमे छलथि।

युद्धस्थलक हेतु बीचमे खाली मैदान छल। दुर्योधन ओहि मैदानक बीचमे अपन पक्षदिस एम्हर-ओम्हर दौगैत अत्यन्त चपलतासँ निरीक्षण करैत सभदिसि पहुँचक कोशिश क’ रहल छलाह। कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, सिन्धुराज, जयद्रथ, कम्बोजराज, सुदक्षिण, कृतवर्मा, कर्ण, भूरिश्रवा, शकुनि आदि अपन-अपन अक्षौहिणीक संगहि नेतृत्वक मुद्रामे तैयार रहथि। एकगोट बड़का रथपर पाकल केश आ’ दाढीक कारणेँ उज्जर देखाइत बूढ़ भीष्म सेहो रहथि जनिका हमरालोकनि अपन ‘पितामह’ कहिअन्हि। हाय भीष्म ! ई की क’ रहल छी ? मरए बेरमे दुर्योधनक अढ़ौतीपर ई कोन कुकृत्यकलेल अहाँ बुढ़ारीमे रणभूमिमे आएल छी ? हाय, पितामह, हे आदरणीय बृद्ध गुरुजन ! हाय !!

हाय, पाञ्चाल कुमारी द्रौपदी! ओ अपन पञ्च पतिकेँ रणभूमिमे किछु दूरधरि अड़िआति दासदासीसभसँ घेरलि उपप्लल्य नगरदिसि जारहलि छलीह। हाय, नारी हाय ! अहाँक प्रतिशोध आ’ प्रतिहिंसाक भावनाक अन्धवेग अहाँक अपन स्वाभाविक नारीत्वक ह्दयकेँ नहि जानि कतए झाँपि तोपि देने अछि।!

हम सभ नारीसभ अपन स्थितिकेँ सहेजति एकबेर एकदोसरकेँ एहि क्षणमे देखलहुँ। बाजएलेल तँ किछु छल नहि, मात्र हृदयक कोन्हमे कोंचल त्रासपूर्ण उद्विग्नता सभक शून्य आँखिपर छाड़ल छलैक – गुफाक अन्हारमे नुकाएल भयत्रस्त असहाय पशुक चमकैत दीन आँखि जकाँ।

तखनहिं अचानक भयङ्कर घोषसहित एकहिबेर असंख्य शंखसभ निनाद क' उठल। धूतहू, भेरीसभ, गजराजक चिग्घार जकाँ घोष करैत बाजए लागल। नगाड़ा गड़कए लगलैक आ'... पृथ्वी लाखौं जनकण्ठसँ निकसल जय ध्वनिक स्वरसँ आब फाटत तब फाटत करए लगलैक। चारुभर अत्यन्त डराओन आवाजक सम्राज्य भ' गेलैक। लगैक, जेना सहस्त्र बज्र एकहिं बेर खसि पड़ल होए आ' पृथ्वीपर भयंकर बिस्फोट भ' गेल होइक। मायक कोरमे सटल नेनाभुटकासभक दम डरसँ फुलए लगलैक आ' ओसभ "माय ! माय !!" करैत चिचिआ उठल। हमर सखी-मितिनसभ विक्षिप्त भ' अपन केशकेँ छिड़िआ-छिड़िआकए नोचैति एम्हर-ओम्हर दौगए लागलि। ... केश तँ केओ आई बन्हनहिं नहि छलि। ककरो माथमे खोपा नहि छलैक। अपनाकेँ केओ सजोने नहि छलि !

हमर मति हेरा गेल। चेतना शून्य भ' गेलहुँ। ठेहुन रोपि माथपर हाथ द' क' नर्कक टलपलाइत दृश्य जकाँ ओहि अस्पष्ट कुरुक्षेत्रकेँ एकटक निहारिरहलि छलहुँ। ओहीमे कतहु एकगोट अश्वारोही सेहो हएत जे हमर करेजकेर मूल अछि। हे परमात्मा, ओकर रक्षा करु, रक्षा करु !

तत्क्षण पछवारीकात पंक्तिबद्ध पाण्डव सेनासँ एकगोट ज्वालामालासँ युक्त रथ सूर्यक किरणमे अग्नि समान चमकैत पहिने नहुँअेसँ आगाँ बहराएल आ' तीब्र गतिमे पूबदिसि बढ़ि गेल। ओहिमे सयकड़ौं घण्टीसभ लागल छलैक जे टुन-टुन करैत बाजिरहल छलैक। ओहिमे जोतल श्वेत घोड़ासभ ओकरहिं तालमे थिरकैत आगाँ बढ़िरहल छल। रथक पार्श्वमे नमहर दण्डीमे कपिक आकारक अङ्कित ध्वजा ओहि भिनसुरका पुरबरियामे फरफरारहल छलैक। रथक लगाम पकड़ने सारथी अपन आसनपर बैसल जाहि निश्चिन्ततासँ मस्त भ' रथकेँ हाँकिरहल छल ताहिसँ तँ लगैत छलैक जेना ओ रथ रणक हेतु नहि आमोद-प्रमोद आ' विहारक वास्ते जोतल गेल होए। हमर एकगोट मितिन ओम्हर आँगुर देखबैति बाजलि, – "देखही तँ, सारथीक आसनपर बैसल कन्हैया अछि। ... ओ कन्हैये तँ अछि !"

साँचे ओकर श्याम वर्ण हँसमुख अनुहार, बीच-बीचमे चमकैत दाँत सूर्यक प्रकाशसँ बेरबेर उद्भासित होइत छलैक। माथपर मयूरक रङ्गविरङ्गी पाँखिक मुकुट, उघार शरीर, डाँड़सँ नीचा पीताम्बर वस्त्र धारण कएने ओ सुन्दर पुरुष निःसन्देह कृष्णे रहथि। हाथमे गाण्डीव पकड़ने आ' बाण धएने रथमे आरुढ़ रहथिन्ह रथपति अर्जुन ! अर्जुनकेर उज्ज्वल कान्तिमय मुँह सूर्यक प्रकाशमे चमकिरहल छलन्हि।

पलभरिमे रथ समरक प्राङ्गणक मध्यमे पहुँचि गेल, कृष्ण जोड़सँ रासि खिचलन्हि। घोड़ासभ सोझहिं ठमकि क' ठाढ़ भ' गेलैक।

अकस्मात् सभ किछु बन्न भ' गेल। क्षणभरिमे सम्पूर्ण कोलाहल रुकि गेल। शंख फुकब बन्न भ' गेल, भेरी तथा धूतहूक आवाज थमि गेलैक। कुदैत-फानैत असंख्य सैनिकसभ मूर्तिवत अपन-अपन स्थानपर निःशब्द ठाढ़ भ' गेल। पुरबरिया बसातो ठमैक गेलैक, सम्पूर्ण चराचर निस्तब्ध भ' गेल। शान्ति एहन जे शमीक गाछसँ भूमिपर खसैत पातक आवाज सेहो स्पष्ट सुनाए लागल।

कनेक कालक बाद अर्जुनक कण्ठसँ वाष्पित आर्तवाणी निकसल, – "हे मधुसुदन ! हमरासमक्ष युद्धहेतु उपस्थित स्वजनक एहि समुदायकेँ मारि विजय प्राप्त करक हमरा कोनो आकांक्षा नहि अछि। ... हमरा ने तँ राज्य चाही आ' ने एहिसँ प्राप्त कोनो सुख !"

ओ कहलखिन्ह, – "हे जनार्दन, ईसभ जौं हमरा मारहु चाहैत छथि तँ मारि देथु। हमर गाण्डीव मुदा हिनकासभपर नहि उठत। तीनहुँ लोकक राज भेटएबला हएत तैयो हम हिनकासभकेँ मारि ओकरा प्राप्त नहि करए चाहब। ... तखन ई हस्तिनापुर की अछि जे हम एहन नरहत्यामे लागू ?"

युद्ध नहि करक निर्णय करैत अर्जुन अपन गाण्डीवकेँ नीचा फेकि देलखिन्ह। भोरक ओहि निस्तब्धतामे अर्जुनक मानवहृदय आओर वाणी सभतरि गुँजि उठल। हम गद्गद् भ' गेलहुँ। हृदय द्रवित भ' गेल। आँखिसँ सन्तोषक नोर खसए लागल।

मुदा तखनहि कृष्णक ईश्वरीय वाणी दूरसँ समुद्रक गर्जन जकाँ सम्पूर्ण शान्तिकेँ भङ्ग करैत सुनाए लागल। ओ कहैत रहथिन्ह, – "हे पार्थ, तोरा मोह आक्रान्त क' नेने छह। अपन गाण्डीव उठाबह आ' युद्धमे रत भ' जाह ! विजयी हएबह तँ पृथ्वीक भोग करबह कथं कदाचित् मारल जएबह तँ स्वर्गक भोग प्राप्त हएतह।"

मुदा अर्जुनक मानवहृदय नहि मानलकन्हि। माथ झटकि क' ओ कृष्णक उपदेशकेँ अमान्य क' देलन्हि। ... की साँचे आई कुरुक्षेत्रमे मानवता दैवत्त्वपर विजय प्राप्त क' लेत ? की आई ठीके अर्जुन ईश्वरकेँ त्यागि मानवताक वरण करएलेल कटिबद्ध भ' जएताह ?

कृष्ण अनेकन् तर्क रखलन्हि। दर्शनक पूर्ण व्याख्या कएलन्हि। हम सूर्यकुण्ड गामक ओहि उँचका धत्तापर ठाढ़ भ' गीताक एक-एक वचन स्वयं श्रीकृष्णक मुहसँ सुनिरहलि छलहुँ। प्रभातकेर शान्त वातावरणमे श्रीकृष्णक ओज्पूर्ण सुरल वाणी बिना कोनो उद्विग्नताकेँ हमरा कानमे पड़िरहल छल। अर्जुन मानव हृदयकेर व्यथासँ व्यथित रहथि। ओ बेर-बेर करुणाद्र भ' शिथिल भ'

जाथि। मनुखक सभ नग्न गुण – करुणा, सहृदयता, स्नेह, प्रेम, स्वजातीयता, कौटुम्बिकता, मैत्री, दया, सभकेर ओहि दिन अर्जुन साकार रुप रहथि ! ओम्हर कृष्ण अनुद्विग्न, शान्त, निश्चल, आत्मनिर्भर एवम् दृढ़ भ' निरन्तर श्लोकपर श्लोक कहैत उपदेश दैते रहि गेलखिन्ह। ओ अर्जुनकें बुझबैत कहलखिन्ह, – "हे कौन्तेय, अहाँकें निस्पृह आ' अनासक्त भ' अपन कर्तव्य करक चाही। निष्काम कर्म कएलासँ पाप नहि होइत छैक। अपन दुश्मनसभकें स्थितप्रज्ञ भ' नाश करु !"

हे कृष्ण, ई केहन निर्मम उपदेश अछि अहाँकेर ? मनुख अपन छोटछीन आशा आकांक्षासँ चालित प्राणी अछि। एकर क्षणिक जीवनमे प्रणयकेर वास छैक – प्रियक संग एकहि क्षण किएक ने होइ सटक लोभ, पुत्रकें चुमक लालसा, मित्रताक आदान-प्रदानमे बन्हल साख्य जीवनमे गरमाएक आकांक्षा। ... अहाँ ने स्वर्गक देवता कृष्ण छी ! स्वर्गक लोक अपन अमरत्वक कारणेँ निस्पृह भ' सकैत अछि, ओकर हृदय करुणाहीन भ' सकैत छैक आ' ओसभ अपन आँखिक नोर रोकि सकैत छथि जतए मृत्यु नहि छैक अनन्त जीवन छैक ततए केओ निष्काम भ' सकैत छथि। ... मुदा हमसभ मनुख छी। हाय ! कालक ग्रासी हमरासभमे ई कहाँसँ सम्भव हएत ? हे कृष्ण ई केहन कर्तव्यक प्रेरणा अछि अहाँक, अपने सखाकें अहाँ युद्धहेतु बेर-बेर उकसा रहल छी ! की मानवजीवन मृत्युकेर दुर्दमनीय साँध-सिमानसँ ओहिना घेराएल सङ्कुचित नहि अछि ? आई अहाँ मृत्युकेँ अस्वाभाविक रुपेँ आह्वान करैत ओकरा फेर कर्तव्यक संज्ञा किएक द' रहल छी ? हे अर्जुन, अहाँकें सम्पूर्ण मनुख-नारीकेर हृदयसँ आशीष। अहाँ निर्भयतापूर्वक देवत्त्वसमक्ष मानवीय सत्य स्थापित क' रहल छी। मनुखक अहिना प्रतिनीधित्त्व करैत रहू। अर्जुन अहाँ अड़ल रहू !

कृष्ण आगाँ बढलथि, – "हे प्रतापी अर्जुन, अहाँ एखन अज्ञानतासँ घेराएल छी। ज्ञानक चक्षु उघारिकए देखू ! एतए कहाँ केओ ककरो मारिरहल छैक ? अहाँक शरीर एकगोट फाटल-पुरान लत्ता अछि। जकरा अहाँ मरब कहैत छी ओ तँ वास्तवमे एकरा फेरब मात्रहिं अछि। ने अहाँ मरब, ने ककरो मारबैक आ' ने एतए केओ मरत। महाबाहो, जे अहाँ एतए देखिरहल छी ओ सभ मिथ्या थिकैक।"

की वास्तवमे ई सभ किछु मिथ्या थिक, भ्रम थिक ? एहि विशाल जनसमुद्रमे हेराएल अपन प्रिय पतिकें खोजैत हमर ई आँखि जे देखिरहलि अछि से सभ दृश्य माया आ' मिथ्या थिकैक ? हृदयमे बसल अपन गर्भक सन्तानक लाल-लाल रसाएल सुन्नर ठोरक बीचमे राखएलेल उन्मुख अपन उर्ध्व स्तन-युगल की वास्तवमे मयेटाक लघु मांस-शिखर अछि ? समुद्रक गर्भमे स्वातीक वृष्टि-बिन्दुक लालसाक कारणेँ खुलैत बन्द होइत सिपी सम्पुट जकाँ सन्तानक तीव्र कामनामे स्पन्दित हमर मातृगर्भ सेहो मिथ्ये अछि ? हे केशव, स्वर्गक उच्चतामे बैसल हएबाक कारणेँ अहाँकें

नीचाक कीटमय मृत्युलोकमे हमरासभकेँ देखि लगैत हएत जे मानवजीवन मिथ्यावत एवम् अप्रासङ्गिक छैक। हमहुँसभ चुट्टीकेँ जखन देखैत छिऐक तँ अहिना लगैत अछि। मुदा हमरासभक जीवन हमरासभलेल कथमपि अप्रासङ्गिक नहि अछि। केहनो तर्क अथवा उच्च दर्शनक कोनो जोर जीवनक एहि सुख-दुखकेँ, मरणकेर सत्यताकेँ, एहि ठोस घेराकेँ मिथ्यामे परिणत नहि क' सकैत अछि, हे मुरारे !

अर्जुनकेँ मानव अवस्थासँ विचलित नहि होइत देखि कृष्ण आगाँ कहिते गेलखिन्ह। निस्पन्द आकाशमे हुनकर गम्भीर वाणी तरङ्गित होइत रहल। उँच पहाड़क शिखरोसँ उपरसँ झहरैत अबैत ध्वनि जकाँ हुनकर शब्दसभ हमरो कानमे पड़ैत रहल। कृष्ण कहैत गेलाह, – "हम परमब्रह्म परमेश्वर छी ! हमरापर पूरा विश्वास आ' आस्था राखू। हम जे कहैत छी सएह करु। हम आदर्श छी अहाँक, अहाँक प्रार्थनाक हेतु छी, हमहीं अहाँक लक्ष्य छी !!"

अर्जुनक मानवीय त्रुटिसभपर बेर-बेर प्रहार करैत अहिना कृष्ण हुनका शिथिल बनबैत गेलाह। भरि उखरा कृष्णक निरद्विग्न कण्ठध्वनि निरन्तर चारुभर गुञ्जैत रहल। ओहि दिन कुरुक्षेत्रमे प्रलय शुरु होमएसँ नरसंहार मचएसँ ठीक पहिनेधरि कृष्णक अठारह अध्यायी गीताक सम्पूर्ण पारायण भेल।

बेचारा एकगोट क्षुद्र मानव देवताक रुद्र तेजक आगाँ कतेक कालधरि अड़ए सकैत ? कखनतक टिकए सकैत ?... अर्जुनक मानव आग्रह ढ़िलिआइत गेलैक। धीरे-धीरे अर्जुनसँ मानवता निकलि गेलैक आ' खाली स्थानमे ओकर बदलामे नहुएँ-नहुएँ देवत्त्व सन्हिआइत चलि गेलैक। अन्तमे, कृष्ण अर्जुनकेँ मुह बाबि अपन ईश्वरीय प्रमाण प्रदर्शित कएलन्हि। अपन विराट रुप देखाकए !

तकराबाद ओ अर्जुन अर्जुन नहि रहि गेलाह। ओ तात्काल ईश्वरारुढ़ यन्त्र बनि गेलाह। हुनकापर देवता सवार भ' गेलन्हि। हुनकर दुहू बलिष्ठ भुजा काँपय लागल। फेकल गाण्डीव चट उठा लेलन्हि आ' प्रत्यञ्चा सेहो चढ़ा लेलन्हि। ...गीताक अठारह अध्याय श्रवण कएलाक पश्चात् मनुख मनुख नहि रहि जाइत अछि। मनुख ईश्वरारुढ़ भ' जाइत अछि आ' तैं अतुल शक्तिसँ विद्युन्मय सेहो।

अकस्मात् रणक्षेत्रक निस्तब्धता फेरसँ भङ्ग भ' गेल। शंख, दुन्दुभि आ' भेरी-नगाड़ाक निनाद तथा सैनिकसभक हुङ्कारसँ कुरुक्षेत्र कम्पित भ' गेल। फेरो चारुभरसँ प्रबल बेगसँ वायु बहए लागल। बिहारि आबि गेलैक। आकाशमे घनगर्जन होमए लगलैक। दैवी शक्तिसँ सम्पन्न अर्जुन उन्मत्त भ' क' अपन गाण्डीवसँ टङ्कार करैत युद्धमे जुटि गेलाह। दूटा पंक्तिबद्ध पर्वत श्रृंखला

ससरिकए जेना आकाशमे टकरा गेल होए तहिना भीषण गर्जन करैत दुहू सेना समरमे भिड़ि गेलैक। अर्जुनेटामे देवता नहि चढ़ल रहैक। गीताक उपदेश कोनो कृष्ण अर्जुनेटाकेँ सुनओने रहथिन्ह ? हुनके मुहसँ कुरुक्षेत्रक सम्पूर्ण सैनिक सेहो गीताक उपदेश सुनि पूर्णरुपेण उन्मादित भ' गेल छल। ... मानव अहिना ईश्वरीय शक्ति लग धर खसा पराजित भ' जाइत अछि। उन्मादित भ' क' आ' एकगोट लक्ष्यप्रति धावित भ' क' !

युद्धक भीड़न्त शुरु भ' गेल। एक नहि दू नहि ...अठारह दिन तक अनवरत मृत्युक यन्त्र हड़हड़ाइत चलैत रहल। कच...कच ...कच ...कच मनुखक असंख्य मनुखक, कच...कच ...कच ...कच कोमल गर्दनि-माथ कटाइत रहलैक, कटाइत रहलैक। तुमुल युद्धघोष होइत छल आ' सहस्त्रौं सहस्त्र योद्धासभक कचरमबध भ' जाइत छलैक। ईश्वरारुढ़ भेल सहस्त्रौंक कण्ठक रणहुङ्कारसँ ज्वालामुखीक बिस्फोट जकाँ होइत भान होइत छलैक। मुदा प्रत्येक मनुख अपन-अपन बेटा बन्धु-बान्धवक बधपर गहींर निश्वास अवस्से छोड़ैत छल अपन एकान्तक निजी उछ्वास कच द' माथ कटिकए पृथ्वीपर खसितो प्रत्येक कवन्ध एकबेर अपन-अपन पएरपर कहुना क' ठाढ भ' नाचिकए चारुदिस देखि लैत छल आ' फेर पछड़ि क' खसि पड़ैत छल। ... नहि जानि स्वर्गक कोन कोन्हमे भुखाएल देवता बैसल छलथि जनिकर क्षुधा एतबोपर नहि मेटारहल छलन्हि। की जानू जे कोन आ' केहन पिआस रहन्हि जे कहुना क' तृप्त नहि भ' रहल छलन्हि ! ... नरमुण्डपर नरमुण्ड चढ़ैत गेलन्हि हुनकासभपर, देवतासभक सम्मुख मनुखक मरक हिमालय पहाड़ ठाढ़ भ' गेलन्हि, सोनितकेर रक्तिम गङ्गा बहए लागल मुदा तैओ हुनकरसभक भूख आ' ओ पिआस नहि मेटाएल। अठारह दिनतक ई महाभारत मचैत रहल। अन्ततः मृत्युक यन्त्र थम्हल, छेदित होमएलेल तखनतक कोनो ग्रीवा बाँकीये कहाँ रहि गेल छलैक ? ओहि युद्धमे मात्र सात गोटे बाँकी रहलाह। लाखों पुरुष मारल गेल। पृथ्वीपरसँ पुरुष शून्य भ' गेल। बस खाली विधवा नारीसभ अहि लोकमे बाँचएलेल रहि गेलि ... सनकलि ... अपन छातीसँ असहाय अपन-अपन बाल सन्तानसभकेँ सटओने।

कुरुक्षेत्र लाखौं मृत शरीरसँ भरल छल, चारुभर मुर्दैमुर्दा छलैक। आब कुरुक्षेत्र श्वान, श्रृङ्गाल, गिद्ध तथा विभिन्न मांसभक्षी पशुपक्षीसभक अमङ्गलकारी क्रिडा आ' छिनाझपटीक केन्द्र भ' गेल छल। दुर्गन्धसँ भरि गेल छलैक।

हम विधवा भ' गेलहुँ। हमरासन लाखौं नारी वैधव्यक शिकार भेलि। विधवा मरलि नारी अछि जकर देह कालान्तरमे गलिकए समाप्त भ' जाइत छैक। कुरुक्षेत्रक ओहि मुर्दाक पहाड़पर कतहु हमरो पतिक शव छल हएत नढ़िआ-कुकुरसभ घिचैत, नोचैत, आ' घिसिअबैत छल हएतैक। नहि जानि कतए घिसिआकए पहुँचा देने हएतैक। मुर्दासभकेँ चील, गीद्धसभ आकाशमे उठा-उठा

क’ कतए-कतए उत्तरभारतदिसि विभिन्न स्थानसभपर उड़ाकए ल’ जा क’ छिड़िआरहल छलैक। ... ओसभ हमरासभक प्रेमीसभक हमरासभक प्रिय पतिसभक लाश छल, हमरासभ विधवासभक ... ।

हमर एकगोट मृत्यु तँ ओही दिन कुरुक्षेत्रमे भ’ गेल जहिया हमर पति मारल गेलाह। दोसर मृत्युक हेतु सेहो हमरा बेशी दिन प्रतीक्षा नहि करए पड़ल। हमरा मोन नहि पड़ैअ हम कहिया मरलहुँ, कोन दिन हमर मानवदेह विसर्जित भेल। मुदा हमरासन अनन्त लाखौं लाख असंख्य नारीसभक प्रेतात्मा अखनो अपन वैधव्य ल’ क’ चौदहो भुवनमे बौआरहलि अछि। अपन-अपन प्रेमीकेँ खोजिरहलि अछि !

तहियासँ ... युगम्युगसँ अपन प्राणनाथक शरीर जतए खसल रहैक ततहि बैसलि छी। अनन्त कालधरि हम एतहि बैसलि रहब, अही पोखरिक कातमे पड़ल रहब। अही स्थानकेँ हमर प्रिय हमर प्रेमी अपन शरीरसँ अन्तिम बेर स्पर्श कएलन्हि। तैं हमरालेल ई थान प्रिय अछि। हमरासभ लाखौं नारी, महाभारतक युद्धमे विधवा भेलसभ, युग-युगसँ ओहि स्थानसभपर प्रतीक्षा क’ रहलि छी। अपन मरल प्रेमीसभक बाट देखिरहलि छी। ओकरेसभक हेतु ...।

“बौआ, हेऔ बौआ ! ... सुति रहलहुँ ... खिस्सा खतम भ’ गेल। ... बौआ ! बौआ !! ... .. नीक जकाँ सुतु ... !”

नहि जानि कखन हम निन्न पड़ि गेलहुँ। पता नहि कखनसँ मोदिआइनक एकसुरक कण्ठध्वनि हमरा कानमे पड़नाई बन्न भ’ गेल। आ’ फेर हम मस्त स्वप्नहीन निद्रामे समाहित भ’ गेलहुँ।

एकहिं बेर एकदम भोरे, कनेक अन्हारेमे मिसरजी हमरा झिकझोरि क’ उठोलन्हि, – “उठू, उठू ! भोरे चारि बजेक गाड़ी पकड़ए पड़त। ... अखने घर घुरए पड़त। बौआ, उठू ... !”

आँखि मिड़ैत उठलहुँ। निन्न नहि पुड़ल छल। ठेही सेहो एखनधरि नहि उतरल रहए तथापि मिसरजीक हाथ पकड़िकए हम स्टेशनदिसि विदा भेलहुँ। अखनो राति बहुत बाँकी रहैक। अबैत काल भीतर कोठरीमे सुतलि मोदिआइनकेँ सुनाकए मिसरजी कहने रहथिन्ह, – “मोदिआइन, हमसभ जाइत छी।”

भीतरेसँ मोदिआइन बाजलि रहए, – “ठीक छैक। ... बौआ, बढ़ियाँसँ जाएब। ... मिसरजी बहरका जाफरी लगा देबैक !”

मोदीकेँ एकबेर फेर खोंखी शुरु भ’ गेलैक।



मोदिआइनक दोकानसँ निकलिते देखलहुँ जे हड़ाहा पोखरिमे एकगोटे नहाकए गीता पाठ करैत जा’ रहल अछि।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः

नचैवं क्लेदयन्त्यपो न शोषयति मारुतः।

स्टेशनपर हम औंघाएले पहुँचलहुँ। कहुना क’ गाड़ीमे चढ़लहुँ से हमरा मोन अछि। मुदा डिब्बामे बैसिते औंघाकए हम फेर निन्न पड़ि गेल छलहुँ । आ’ नहि जानि की-की सपनाए लागल छलहुँ ... अर्थ ने वर्थकेर ... कथी-कथी, की-कहाँदोन ! कखनो एकदम चमकैत सूर्य देखाइत छल तँ कखनो मोदिआइन आगाँ चलि अबैति छलि। कखनो काल बड़का-बड़का डराओन गिद्धसभ आकाशमे मड़ड़ाइत देखैत छलहुँ । ... कखनो जेना माछ बेचैत मलाहिन आबि जाए तँ कखनो लड़ाईं ... कच... कच... कच। एहि सभक बीचमे हमरा दूर आकाशसँ एकहिटा स्वर सुनाई पड़ए, – “बौआ, बड़का बनब, कहियो वीर बनक प्रयत्न नहि करब। नीकलोक बनब, नीक ... बढ़ियाँ !”

जखन रेल जयनगर पहुँचलैक तँ बढ़ीयाँ रौद उगि गेल छलैक। रेलसँ उतरिते अङ्ग-अङ्ग दुखाए लागल। दड़िभङ्गा यात्राक ठेही चढ़ले छल। निन्न सेहो नहि पुरल छल तैं मोन भारी आ’ अस्थिर छल।

आङ्गन पहुँचलहुँ तँ सभ केओ हमरा घेरि लेलथि आ’ पुछलथि, – “की सभ देखलह, दड़िभङ्गामे ?”

हम कहलिऐक, – “मोदिआइन !”

सभ केओ ठठाकए हँसि देलथि। शायद हुनकासभकेँ हम कोनो ठट्ठाक वस्तु सुना देने रहिअन्हि।

सुन्दरीजल बन्दीगृह,

२८, २९, ३० जनवरी १९६४

माघ १५,१६,१७ २०२०



विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक जन्म ८ सितम्बर, १९१४ अर्थात बि.सं. १९७२, भाद्र २४ गते। छठिहारक नाम चूड़ामणि होइतो काशीमे जनमल छलाह तैं काशीक आदिदेवक प्रसादक रुपमे हिनक पारिवारिक नाम विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला राखल गेलन्हि। चारिये बर्षक उमेरमे अपन पिताजीक संगे शरणार्थीक रुपमे विदेशमे निर्वासित रहएहेतु बाध्य होमए पड़लन्हि।

लेखन नवम् कक्षाक छात्रजीवनेसँ शुरु कएलन्हि। तहियाक लेखादि मुख्य रुपसँ हिन्दीमे होइत छलन्हि। प्रसिद्ध समालोचक शान्तिप्रिय द्विवेदी तथा हिन्दीक मूर्धन्य उपन्यासकार प्रेमचन्दक मार्गदर्शनमे लेखन प्रारम्भ कएने छलाह। ओहि समयकेर लघुकथासभ प्रेमचन्दद्वारा सम्पादित मासिक **हंस**मे प्रकाशित भेल छन्हि। नेपालीमे हिनकर पहिल कथा **चन्द्रवदन** कवि सिद्धिचरण श्रेष्ठक सम्पादनमे काठमाण्डूसँ प्रकाशित मासिक पत्रिका **शारदा**मे निकसल छल।

मनोविश्लेषणात्मक पृष्ठभूमिमे लिखल कथासभ **कथा कुसुम** आ' २००६ सालमे **दोषी चश्मा** संग्रहक प्रकाशन नेपाली कथा साहित्यमे हिनका युगप्रवर्तकक रुपमे प्रस्तुत कएलकन्हि। मुख्यतः चेखव, मोपासाँ, टाल्सटाय, गोर्की, वर्नार्ड शा हिनकर पसिन्न रहथिन्ह– आ' नेपालीमे देवकोटा आ' सम।

२०१७ साल पुष १ गतेक बाद आठ बर्षक जेलजीवनमे पाँचटा उपन्यास, एकगोट कथासंग्रह, एकटा कवितासंग्रह, किछुनाटक आ' जीवनीक ३५० पृष्ठ लिखलन्हि। पाँचगोट उपन्यास, किछु कविता, आ' दूगोट कथासंग्रह प्रकाशित भेल अछि। **मोदिआइन** हुनकर एकगोट अपने किसिमक लघु उपन्यास छन्हि।

कोइरालाजी कहथिन्ह, – "वास्तवमे हम अपनाकेँ साहित्यिक नहि बुझैत छी। हमर क्षेत्र तँ राजनीतिक थिक। राजनीतिमे हम एकगोट अन्तर्प्रेरणासँ लगलहुँ आ' साहित्यमे एकर ठीक विपरित। कलाकेँ सुरक्षा नहि चाही, एकरा स्वतन्त्रता चाही। एकरा चलल बाटपर फेरसँ पएर राखक मोन नहि होइत छैक। अपन रस्ता अपने बनाबए चाहैत अछि। ई भौतिक तृप्ति नहि दैवी असन्तोष अपनअबैत अछि। फ्रायडक सिद्धान्तकेँ हम मानैत छी मुदा अखन अहूसँ बढ़िकए हम आई नैतिकता (orality)केँ मानैत छी।"



मैथिली रुपान्तरकार बृषेश चन्द्र लालक जन्म १९५५ ई. २९ मार्च। हिनक छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि, आ' छथिओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी आ' नेपालक प्रजातान्त्रिक आन्दोलनक सत्रिय योद्धा। नेपालक राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि। प्रस्तुत रुपान्तरणक अलावा मैथिलीमे हिनक 'आन्दोलन' कविता संग्रह, 'माल्हो' कथा संग्रह, 'संघीयताक सम्बन्धमे' अनुवाद प्रकाशित छन्हि।